श्री गणेशाय नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

Hindu Heritage Society Inc, Australia

हिन्दु संस्कृति संध इन्क, ओस्ट्रेलिया

द्वारा प्रकाशित

श्री सत्य नारायण व्रत कथा ॥

हिन्दी, English तथा पद्य में एवं विस्तृत पूजन विधि सहित।

देश के मूर्धन्य धर्म उपदेशकों द्वारा रचित रचनाओं का एक समन्वयात्मक संकलन्।

संकलन् कर्ता। टाइपिंग-सहयोगी।

पं० नारायण दत्त भट्ट (शास्त्री) **पं० जगदीश महाराज (J.P.)**

विषय सूची।

- विस्तृत पूजन विधि।
- श्री सत्य नारायण पूजन।
- श्री सत्य नारायण अर्चना।
- श्री सत्य नारायण कथा (पद्य)।
- श्री सत्य नारायण कथा (हिन्दी)।
- श्री सत्य नारायण कथा (English)।
- हवन विधि।
- आरतियाँ।
- पुष्पाञ्जलि, प्रार्थना।
- विसर्जन एवं शान्ति पाठ।
- कीर्तन एवं भजन।
- Intro. to HHS
- Late Vinita Shekhar

प्राक्कथन (PREFACE)

भगवान वेद अपौरुषेय हैं। इनकी रचना किसी प्राकृत पुरुष के द्वारा नहीं हुई बल्कि यह परमात्मा की उदार वाणी सर्वजन हिताय प्रवाहित हुई है। ऐसे सर्वमान्य वेदों के वर्तमान में उपलब्ध एक लक्ष्य ऋचाओं में अस्सी हजार ऋचायें कर्मकाण्ड परक हैं अतः यह निर्विवाद रूप से सिद्ध होता है कि भारतीय संस्कृति की आदि परम्परा में कर्म काण्ड का प्रमुख स्थान रहा होगा।

सकाम कर्मानुष्ठान से मनवाँछित फल की प्राप्ति का सिद्धान्त भी उतना ही प्राचीन है जितनी प्राचीन हमारी सभ्यता है। सकाम कर्मानुष्ठान की परम्परा में ***सत्य नारायण*** पूजा का सर्वाधिक महत्व देखने को मिलता है। गरीब हो या धनवान, मूर्ख हो या विद्वान, यह सर्व सुलभ व्रत प्रायः सभी के यहाँ सम्पन्न होता है। कुछ विधान भेद के साथ यह पुजा प्रत्येक हिन्दु बड़ी श्रद्धा से सम्पन्न करता है।

बहुधा समाज में कुछ लोग विधि का ठीक से ज्ञान न होने के कारण अशास्त्रीय पद्धति से इस पूजा को सम्पन्न कराते हैं यह देख कुछ जानकार लोगों ने हमसे अनेक बार आग्रह किया था कि कोई प्रामाणिक पुस्तिका तैय्यार की जाय। फलतः हमें इस दिशा में विचार करना पड़ा तथा अल्प परिश्रम से ही यह कार्य सम्पन्न हो गया।

लोगों कि रूची संगीत के प्रति नैसर्गिकी होती है और यह कान्तासम्मित उपदेश विधा ही आज के जन मानस को अधिक रूचिकर है। अतः इस लधु संग्रह में देश के मूर्धन्य विद्वानों की अमृत तुल्य पद्यात्मक वाणी के साथ साथ प्रामाणिक कर्मकाण्ड के ग्रन्थों से शास्त्रीय पद्धति में साङ्गोपाङ्ग पूजन क्रम को भी संग्रहित किया गया है तथा प्रत्येक अध्याय

के सार तत्व को शीर्षक रूप में प्रस्तुत कर चिन्तन का मार्ग प्रशस्त किया है जो अन्य प्रकाशित पुस्तिकाओं में अप्राप्य है।

प्रथम संस्करण की लोक प्रियता को देखते हुये इसका द्वितीय संस्करण कुछ अधिक विषय वस्तु के साथ करने का मन तथा लोगों का सतत आग्रह हो रहा था लेकिन यह कार्य भगवत कृपा से तब सम्पन्न हुवा जब हमारे परम स्नेही **श्री असीम शेखर जी** ने अपनी पत्नी की स्मृति में कुछ विशेष कार्यक्रम करने का आग्रह किया। उनका मन था कि **स्वर्गीय विनीता शेखर** को सत्य नारायण भगवान पर बहुत विश्वास था और उनके निधन की प्रथम वर्ष गाँठ पर यह पुस्तिका उनकी स्मृति में समर्पित करने का संकल्प किया। सत्य नारायण प्रेम का पर्याय वाची है। यह प्रेम सुमन, **शेखर परिवार ने छपवा कर आप के लिये उपलब्ध कराया है।** भक्तों की रूचि के अनुरूप इस द्वितीय संस्करण में पूजन, कथा (गद्य तथा पद्य में) एवं कुछ प्रसिद्ध भजनों का समावेश प्रथम संस्करण की अपेक्षा अधिक महत्व पूर्ण बनाता है।

समपूर्ण विषय वस्तु को दुबारा टाइप करके याने लिख करके पुस्तक का रूप देने में हमारे **पूज्य पण्डित जगदीश महाराज (J.P.) तथा उनके परिवार** का विषेश योगदान रहा है तथा अन्यान्य पण्डितों का भी इसमे सहयोग प्राप्त हुवा है। मैं इन सभी का हृदय से आभारी हूँ। **मेरी पत्नी राधिका जी** के सहयोग के बिना मेरे लिये यह कार्य असम्भव था अतः इस के सम्पन्न में उनका भी अविस्मरनीय है।

अन्त में मेरा विश्वास है कि सनातन धर्मावलम्बी इस संग्रह से यथाशक्य लाभ उठायेंगे तथा उदारमना गुरुजन वृन्द इसकी त्रुटियों के प्रति हमें सचेत करने की कृपा करेंगे।

विजया दशमी। ***विनीतः***

०२/१०/२००६. ***नारायण दत्त भट्ट (शास्त्री)***

॥ मण्डप की रचना ॥

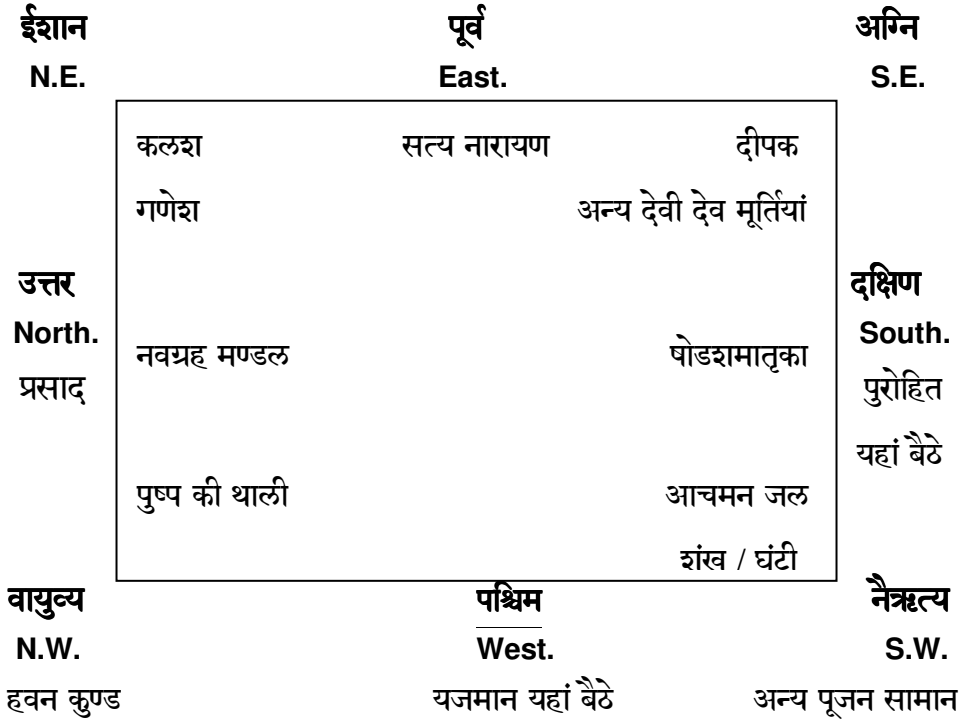

श्री सत्य नारायण पूजा प्रकरण।

निश्चित दिन में घर की पूर्व या उत्तर दिशा में ***श्री सत्य नारायण पूजा*** हेतु सुन्दर मण्डप निर्माण करना चाहिए। मण्डप निर्माण विधि इस प्रकार है - सर्व प्रथम, लगभग एक मीटर लम्बी तथा एक मीटर चौड़ी चौकी का प्रबन्ध करें। उसकी ऊँचाई ३०० सेन्टिमीटर के लगभग हो। उसके चारो कोनों में केले के पत्ते बांध कर एक लधु मण्डप निर्माण किया जा सकता है। चौकी पर सुन्दर पीला या श्वेत वर्ण का वस्त्र बिछा हो। मण्डप की नैऋत्य (S.W) कोनें में जलपात्र, शंख, घंटा, धूपदानी और तेल का दीपक रखें। मण्डप के अग्नि कोण (S.E) में घृत दीपक तथा अर्घ्य रखें। मण्डप के वायुव्य (N.W) कोनें में कुंकुम,

चन्दन, हल्दी, अक्षत, पुष्प रखें एवं अन्य पूजनोपयोगी वस्तु भी निकट ही रखें। घट स्थापन विधि से मण्डप के ईशान कोण (N.E) में (ऊपर दिये चित्र में देखें) कलश स्थापित करें तथा पूर्व दिशा में पूर्ण पात्र के ऊपर भगवान सत्यनारायण की स्वर्ण मयी प्रतिमा प्राण प्रतिष्ठा पूर्वक क्रम के अनुसार स्थापित करनी चाहिए। नवग्रह मण्डल तथा षोडश मातृका पूजन उत्तर तथा दक्षिण दिशा में किया जाता है। पुरोहित तथा यजमान यथायोग्य दक्षिण और पश्चिम में बैठें।

पूजन प्रारम्भ करने से पहले शुद्ध धुले हुवे वस्त्र पहन कर अन्य सभी प्रकार के कार्यों से निवृत हो मन तथा शरीर से परमात्मा के सान्निध्य में पूरी निष्ठा तथा भाव से बैठें। बैठने के लिए कुशासन, कम्बलासन, व्याध्रचर्म या मृगचर्म का उपयोग किया जाता है। यदि पूजन हवनात्मक हो तो पूजा आरम्भ करने से पूर्व ही वेदी के निकट ही हवन कुण्ड की स्थापना तथा हवनोपयोगी सामग्री को एकत्रित कर लेना चाहिए। मण्डप की साज सज्जा भी पूजन प्रारम्भ होने से पूर्व ही कर लेनी चाहिये।

षट्कर्म।

क्रिया शरीर को परमात्मा से जोड़ती है तथा मन्त्र मन को परमात्मा से जोड़ते हैं। परमात्मा नित्य शुद्ध बुद्ध है अतः सर्व प्रथम निम्न मन्त्र से शरीर पर तथा पूजा सामग्री पर जल के छींटे देते हुवे मन्त्र बोलें॥

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

पुनः अन्तः करण की शुद्धि हेतु तीन आचमन करें।

ॐ केशवाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः।

इस मन्त्र से हस्त प्रक्षालन करें।

ॐ गोविन्दाय नमो नमः। हस्तौ प्रक्षाल्य॥

बांयें हाथ में थोड़ा सा जल लेकर दायें हाथ की अनामिका तथा मध्यमा उंगली से अङ्गस्पर्श करें।

ॐ वाङ्मे आस्ये अस्तु। मुख का स्पर्श करें।

ॐ नसोर्मे प्राणो अस्तु। नांक का स्पर्श करें।

ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु। आंखों का स्पर्श करें।

ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। कांनों का स्पर्श करें।

ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु। बांहों का स्पर्श करें।

ॐ ऊर्वो मे ओजोऽस्तु। जांघों को स्पर्श करें।

बचा हुआ जल मस्तक के ऊपर से पूरे शरीर पर छिड़कें।

ॐ अरिष्टानि मे अङ्गानि तनुस्तन्वा मे सहसन्तु।

इस मन्त्र से यजमान ब्राह्मण को तिलक करें।

नमो ब्रह्मण्य देवाय, गोब्राह्मण हिताय च। जगद्धिताय कृष्णाय, गोविन्दाय नमो नमः॥

इस मन्त्र से ब्राह्मण यजमान को टीका करें।

चन्दनन्तु महत्पुण्यं, पवित्रं पापनाशनम्। आपदं हरते नित्यं, लक्ष्मिस्तिष्ठतु सर्वदा।

इस मन्त्र से यजमान पुरोहित को कलावा बाँधे।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणां। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।

इस मन्त्र से पुरोहित यजमान को रक्षाबन्धन करे।

येन बद्धो बली राजा, दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वामनु बध्नामि, रक्षे मा चल मा चल।

इस मन्त्र से दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में पवित्री धारण करें।

ॐ कुशमूले ऽस्थितो ब्रह्मा, कुशमध्ये जनार्दनः।

कुशाग्रे संस्थितो शम्भुः, त्रिभिर्देवा कुशस्थितौ॥

पृथ्वी का स्पर्श कर इस मन्त्र को बोलें तथा पृथ्वी पूजन करें।

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका, देवि त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां भद्रे, पवित्रं कुरू चासनम्॥

हाथ में चावल लेकर दशों दिशाओं में छिड़कें, भावना करें कि हम हर प्रकार के विघ्नों को यथा स्थान रोक कर परमात्मा के साथ तन्मय हो रहे हैं।

॥ भूतोत्सादन मन्त्र ॥

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता, ये भूता भूतले स्थिताः।

ये भूता विघ्न कर्तारस्ते, नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

अपक्रामन्तु भूतानि, पिशाचा सर्वतो दिशम्।

सर्वेषाम् अविरोधेन, पूजा कर्म समारभे॥

॥ प्राणायाम विधि ॥

तत्पश्चात प्राणायाम करें। विधि इस प्रकार है - सर्व प्रथम सुखासन में बैठ जायें, फिर दायें हाथ के अंगूठे से दायीं नासिका छिद्र को बन्द कर बाह्या रेचक करें। (भीतर की वायु को धीरे धीरे बाहर निकालें।) पुनः मन ही मन एक आवृति मन्त्र बोलते हुए वाम नासिका से स्वाँस भीतर को खींचे एवं चार आवृति (मन ही मन) मन्त्र बोलें। दो आवृति मन्त्र के साथ स्वास को दायीं नासिका से धीरे धीरे बाहर कर दें, इस प्रकार पूरक कुम्भक तथा रेचक की प्रक्रिया से प्राणायाम बनता है जो योग का चतुर्थ महत्वपूर्ण अंग है। कम से कम तीन प्राणायाम कर हाथ धो आचमन कर हाथ में पुष्पाक्षत लेकर निम्नोक्त स्वस्ति वाचन करें।

॥ स्वस्ति वाचन ॥

हरिः ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।

स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निर्जिह्वा मनवः सूर चक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह॥
भद्रं कर्णेभिः ऋृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरै रङ्गै स्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥
शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥
अदितिर्द्यौ रदिति रन्तरिक्ष मदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वेदेवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जात मदितिर्ज नित्वम्॥
द्यौः शान्ति रन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः शान्ति रोषधयः
शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ꣳ शान्तिः
शान्ति रेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं
कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ सुशान्तिर्भवतु॥

श्री मन्महागणाधिपतये नमः।
लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।
उमा महेश्वराभ्यां नमः।
वाणी हिरण्य गर्भाभ्यां नमः।
शची पुरन्दराभ्यां नमः।
माता पितृ चरण कमलेभ्यो नमः।
इष्ट देवताभ्यो नमः।
कुल देवताभ्यो नमः।
ग्राम देवताभ्यो नमः।
वास्तु देवताभ्यो नमः।
स्थान देवताभ्यो नमः।
सर्वेभ्यो देव्येभ्यो नमः।
सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।
ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नमः।

॥ गणपति वंदना ॥

सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गज कर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विध्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशौ तानि नामानि यः पठे क्षृणु यादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विध्नस्तस्य न जायते॥
शुक्लांबरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विध्नोप शान्तये॥
अभीप्सितार्थ सिध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्व विध्न हरस्तस्मै गणाधिपतयेनमः।
सर्व मङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवं। वंदे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्
सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाम मंगलम्। येषां हृदिस्थो भगवन् मंगलाय तनं हरिः।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव, ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव, लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रि, युगं स्मरामि॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवर श्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयोर्भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहं।
स्मृते सकल कल्याणं भाजनं यत्र जायते। पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥
सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः॥

हस्तस्थ अक्षत पुष्प पूजन वेदी पर चढ़ा दें। प्रत्येक सत् कर्म संकल्प पुरस्सर होता है, अतः हाथ में जल, पुष्प, अक्षत तथा पैसे रख कर निम्न मन्त्र बोलें।

॥ संकल्प ॥

हरिः ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमाय, विष्णो राज्ञया प्रवर्त मानस्य अद्य ब्रह्मणोऽह्नि, द्वितीय परार्धे श्रीश्वेत बाराह कल्पे वैवस्वत मंवन्तरे, अष्टा विंशति तमे, कलियुगे कलि प्रथम चरणे, भूर्लोके, आर्यावर्तैक देशान्तर्गत पुण्य पवित्र क्षेत्रे (अमुक) महाद्वीपे (अमुक) नगरे (अमुक) नाम ग्राम स्थाने शष्ट्यब्दानां मध्ये (अमुक) संवत्सरे अमुकायने महा मांगल्य प्रदे मासानां मासोत्तमे (अमुक) मासे, (अमुक) पक्षे, (अमुक) तिथौ, (अमुक) वासरे, नक्षत्रे, योगे, मुहूर्ते, लग्ने (अमुक) काले (अमुक) गोत्र उत्पन्नः (अमुक) नामोऽहं (नाम्न्यहं - स्त्री के लिये) श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थम् मम स कुटुम्बस्य स परिवारस्य क्षेमस्थैर्यायुरारोग्यैश्वर्याभि बृध्यर्थम् आधि दैविक आधि भौतिक अध्यात्मिक त्रिविध ताप शमनार्थ धर्मार्थ काम मोक्ष प्राप्त्यर्थम् , श्री गौरि, गणेश, कलश, षोडशमात्रिका, नवग्रह आदिनां पूजन पूर्वकं भगवतो श्री सत्य नारायणस्य यथाविधि पूजनञ्चाऽहं करिष्ये ॥

हाथ का जलाक्षत सुरक्षित स्थान पर छोड़ दें। आगे पूजन का क्रम इस प्रकार रहेगा। सर्व प्रथम गणेश पूजन, फिर ईशान कोण में स्थित वरुण कलश पूजन, फिर गौर्यादि षोडश मातृका पूजन, सूर्यादि नवग्रह पूजन, पञ्चलोकपाल देवता पूजन, दश दिग्पाल देवता पूजन तथा अन्त में प्रधान देव - सत्य नारायण का पूजन होगा। पूजन शक्ति, समय तथा सामार्थ्य के अनुसार किया जा सकता है - यथाः

पञ्चोपचार - गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य।

दशोपचार - पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य।

षोडशोपचार .

पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, आभूषण, गन्ध, पुष्पाञ्जलि, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, ताम्बूल, स्तुति, पुष्प तथा नमस्कार। यौं तो शास्त्रों में चौंसठ उपचार से भी पूजन सम्पन्न करने का विधान मिलता है लेकिन पूजा में वस्तु की अपेक्षा भाव का ही अधिक महत्व बताया गया है। **ध्यान रहे किः** यहां पर संक्षिप्त पूजन का क्रम कहा गया है किन्तु विशाल यज्ञों में पूजन के क्रम में परिवर्तन तथा परिवर्धन होता है। एवं सम्प्रदाय अथवा उत्तर दक्षिणाञ्चलीय भेद से भी प्रत्येक क्रम तथा विधान में पार्थक्य दृष्टिगोचर होता है॥

सर्व प्रथम बायीं ओर स्थित घण्टी का पूजन करें तथा घण्टा नाद करें।

॥ घण्टी पूजन मन्त्र ॥ आगमार्थम् तु देवानां, गमनार्थम् च रक्षसाम् ।
कुरू घण्टे वरं नादं, देवता स्थान सन्निधौ॥
ॐ घण्टस्थ गरूड़ाय नमः। पुष्प अक्षतां समर्पयामि॥

॥ शङ्ख पूजन मन्त्र ॥ त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया।
शङ्खे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्मात् शङ्खं प्रपूजयेत्॥
ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पवमानाय धीमहि तन्नः शङ्ख प्रचोदयात्॥
पवमानाय नमः। पाञ्चजन्याय नमः। पद्मगर्भाय नमः।
अम्बुराजाय नमः। कम्बुराजाय नमः। धवलाय नमः।
त्वं पुरा सागरोत्पन्नो, विष्णुना विधृतः करे। निर्मितः सर्वदेवैश्च, पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते॥
ॐ शङ्खं पूजयामि, नमस्करोमि, पुष्पाक्षतां समर्पयामि।

॥ दीपक पूजन मन्त्र ॥ दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म, दीप ज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु मे पापं, दीप ज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥
भो दीप देवरूपस्त्वं, कर्म साक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्म समाप्तिः स्यात्, तावत्त्वं सुस्थिरो भव॥

क्रिया एवं भावनाः- देव पूजा के क्रम में (देवालय को छोड़ कर) सर्व प्रथम उस देव का ध्यान तथा आवाहन किया जाता है। फिर पाद प्रक्षालन के लिये पाद्य, हस्त प्रक्षालन के लिये अर्ध्य, आचमन तथा स्नानार्थ जल दिया जाता है। पुनः पञ्चामृत से स्नान कराया जाता है। अन्य सुगन्धित द्रव्यों से भी स्नान "अभिषेक" करा कर शुद्ध वस्त्र तथा जनेउ प्रदान किया जाता है। पुनः गन्ध, अक्षत, पुष्प प्रदान करने के बाद, दक्षिण भारत में अंग पूजन का विशेष विधान होता है, जो नाम मन्त्रों से होता है। तदनन्तर धूप सुंधायें, दीपक दिखायें, हाथ धो कर नैवेद्य (प्रसाद) भगवान के समक्ष रखें उस में तुलसी दल छोड़ें (यदि विशिष्ट पूजन में निषेध न हो तो) पुनः ताम्बूल (पान) ऋतुफल तथा दक्षिणा समर्पित करने का विधान है। अन्त में आरती और पुष्पाञ्जलि करके हवन,पाठ, कथा कर प्रसाद ग्रहण करें। यहां पर सभी देवों का मात्र ध्यान तथा आवाहन दिया गया है किन्तु मन्त्र सभी देवताओं की पूजा के लिये सत्य नारायण पूजा के अनुसार ही रहेंगे, उन्हीं मन्त्रों से सभी देवों की पूजा की जा सकती है।

॥ गणेशाम्बिका का ध्यान पूजन ॥

ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवा महे, प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवा महे।
निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे, वसो मम। आहमजानि गर्भधमा,
त्वमजासि गर्भधम्॥

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके, न मा नयति कश्चन।
ससस्त्य श्वकः सुभद्रिकां, काम्पील वासिनीम्।
सर्व मंगल मांगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि, नारायणि नमोऽस्तु ते॥
सर्वदा सर्वकार्येषु, नास्ति तेषाम मंगलम्।
येषां हृदिस्थो भगवन्, मंगलाय तनं हरिः॥

ॐ गं गणपतये नमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि,

आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि नमस्करोमि ॥

ॐ भूर्भुव स्वः सिद्धि बुद्धि सहिताय श्री मन्महा गणाधिपतये नमः ॥

आवाहन के पश्चात पूर्वोक्त क्रम के अनुसार पूजन करना चाहिये। मन्त्र ***सत्य नारायण*** पूजा विधि से प्रयोग करने चाहिये, मन्त्र की समाप्ति पर कहना चाहिये।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि, अक्षतान् इत्यादि समर्पयामि।

विशेषार्ध्य - *ताम्र पात्र में जल, चन्दन, अक्षत, फल, फूल, दूर्वा, सुपारी और दक्षिणा रखकर अर्ध्य पात्र को हाथ में लेकर निम्नोक्त मन्त्र बोलना चाहिये -*

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक। भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।

द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो। वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।

अनेन सफलार्ध्येण वरदोऽस्तु सदा मम।

॥ प्रार्थना ॥

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय। लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ॥

नागाननाय श्रुति यज्ञ विभूषिताय। गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

॥ कलश स्थापन पूजन ॥

वेदी के ईशान कोण में वरुण कलश की स्थापना करनी चाहिये। यह कोण पूर्वोत्तर कोण कहलाता है। कलश में पञ्चरत्न, सप्तमृतिका, पञ्चपल्लव, चन्दन, दूब, सुपारी एवं पैसा डाल कर उसे वस्त्र से परिवेष्टित कर उसके ऊपर पूर्ण पात्र (चावल से भरा हुवा पात्र) रखें तथा उसके ऊपर वस्त्राच्छादित

नारियल रखें। कलश में वरुण देव का ध्यान और आवाहन करें।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा बन्द मानस्तदा, शास्ते यजमानो हविर्भिः।

अहेड़मानो वरुणेह वोध्युरूशꣳ, स मा न आयुः प्र मोषीः॥

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं, सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि।

वरुणाद्यावाहित देवताभ्यो नमः, ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि।

ॐ अपांपते वरुणाय नमः॥

पुनः हाथ में अक्षत पुष्प लेकर कलश में वेदों, तीर्थों, नदियों, सागरों एवं देवी देवताओं का आवाहन करें।

कलशस्य मुखे विष्णु, कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा, मध्ये मातृगणा स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे, सप्त द्वीपा बसुन्धरा।

ऋगवेदो ऽथ यजुर्वेदः, सामवेदोः ह्यथर्वणः॥

अङ्गैश्च सहीताः सर्वे, कलशं तु समाश्रिताः।

आयान्तु देव पूजार्थम्, दुरित क्षय कारकाः॥

गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिंधु कावेरी, जले ऽस्मिन् संनिधिं कुरू॥

सर्वे समुद्राः सरितः, तीर्थानि जलदा नदाः।

आयन्तु मम शान्त्यर्थम् दुरित क्षय कारकाः॥

पश्चात पूर्व क्रमानुसार प्रतिष्ठा,पाद्य अर्घ्यादि उपचारों से पूजन कर कर्पूर आरती, पुष्पाञ्जली के पश्चात प्रार्थना मन्त्रों को बोलें।

देव दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।
त्वत्तोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः। त्वयि तिष्ठान्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।
शिवः स्वयं त्वमेवासित्, विष्णु त्वं च प्रजापतिः। आदित्या वसवो रूद्रा विश्वे देवा स पैतृकाः।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फल प्रदाः। त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव।
सांनिध्यं कुरुमे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥

ॐ अपां पतये वरुणाय नमः। प्रर्थना पूर्वक नमस्कारं करोमि॥

षोडश मातृका पूजन।

१६ आत्मनः कुल देवता	१२ लोक मातरः	८ देव सेना	४ मेधा
१५ तुष्टिः	११ मातरः	७ जया	३ शची
१४ पुष्टिः	१० स्वाहा	६ विजया	२ पद्मा
१३ धृतिः	९ स्वधा	५ सावित्री	१ गौरी गणेश

कोष्टक में दिखाये क्रम से ही मातृकाओं का पूजन होता है, हाथ में अक्षत पुष्प लेकर नाम मन्त्रों से प्रत्येक कोष्टक में आवाहन - स्थापन करते जायें।

१ - ॐ गणपतये नमः गणपति मावाहयामि, स्थापयामि॥

१ - ॐ गौर्यै नमः गौरी मावाहयामि, स्थापयामि॥

२ - ॐ पद्मायै नमः पद्मा मावाहयामि, स्थापयामि॥

३ - ॐ शच्यै नमः शची मावाहयामि, स्थापयामि॥

४ - ॐ मेधायै नमः मेधा मावाहयामि, स्थापयामि ॥

५ - ॐ सावित्र्यै नमः सावित्री मावाहयामि, स्थापयामि ॥

६ - ॐ विजयायै नमः विजया मावाहयामि, स्थापयामि ॥

७ - ॐ जयायै नमः जया मावाहयामि, स्थापयामि ॥

८ - ॐ देव सेनायै नमः देव सेना मावाहयामि, स्थापयामि ॥

९ - ॐ स्वधायै नमः स्वधा मावाहयामि, स्थापयामि ॥

१० - ॐ स्वाहायै नमः स्वाहा मावाहयामि, स्थापयामि ॥

११ - ॐ मातृभ्यो नमः मातृ मावाहयामि, स्थापयामि ॥

१२ - ॐ लोक मातृभ्यो नमः लोक मातृ मावाहयामि, स्थापयामि ॥

१३ - ॐ धृत्यै नमः धृति मावाहयामि, स्थापयामि ॥

१४ - ॐ पुष्टयै नमः पुष्टि मावाहयामि, स्थापयामि ॥

१५ - ॐ तुष्टयै नमः तुष्टि मावाहयामि, स्थापयामि ॥

१६ - ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः आत्मनः कुलदेवता मावाहयामि,स्थापयामि ॥

ॐ गणेश सहित गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः। आवाहिते कर्मणि पाद्यार्घ्यम आचमनीय, वस्त्रोपवस्त्र, धूप, दीप, नैवेद्य, ऋतुफलादीन् समर्पयामि नमस्करोमि।

इतने उपचार कर हाथ में पुष्प ले प्रार्थना करें।

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।

देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोक मातरः।

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।

गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडशः ॥

॥ नवग्रह मण्डल पूजन ॥

ईशान N.E | **पूर्व** East | **अग्नि** S.E

उत्तर North South **कुबेर** | **दक्षिण** **यम**

ब्रह्मा इन्द्र

विष्णु विष्णु **४ – बुध**	इन्द्राणी इन्द्र **६ – शुक्र**	अप् उमा **२ – चन्द्र**
इन्द्र ब्रह्मा **५ – गुरु**	अग्नि ईश्वर **१ – सूर्य**	पृथ्वी स्कन्द **३ – मंगल**
ब्रह्मा चित्रगुप्त **९ – केतु**	प्रजापति यम **७ – शनि**	सर्प काल **८ – राहु**

वरुण अनन्त

वायु N.W | **पश्चिम** West | **नैॠत्य** S.W

सूर्य का आवाहन करें - सूर्य – रवी (SUN)(Centre) मध्य में गोलाकार – लाल।

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतं मर्त्यञ्च।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याय नमः श्री सूर्य मावाहयामि स्थापयामि।

चन्द्रमाँ का आवाहन करें - चन्द्र (MOON)(S.E.) अग्निकोण में – श्वेत।

ॐ इमं देवा असपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते जेष्ठ्याय महते

जानराज्याय इन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्र ममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी, राजा सोमो ऽस्माकं ब्राह्मणाना ꣳ राजा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोम मावाहयामि स्थापयामि।

मंगल का आवाहन करें – मंगल (MARS)(South) दक्षिण में – लाल।

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ꣳ रेता ꣳ सि जिन्वति॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भौमाय नमः भौम मावाहयामि स्थापयामि।

बुध का आवाहन करें – बुध (MERCURY)(N.E.) ईशान में – हरा।

ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते स ꣳ सृजेथामयं च।
अस्मिन्त् सधस्थे अध्युत्त रस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः बुधाय नमः बुध मावाहयामि स्थापयामि।

गुरु का आवाहन करें – बृहस्पति (JUPITER)(North) उत्तर में – पीला।

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋृत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः बृहस्पतये नमः बृहस्पति मावाहयामि स्थापयामि।

शुक्र का आवाहन करें – शुक्र (VENUS)(East) पूर्व में – श्वेत।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः।
ऋृतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्र मन्धस इन्द्रस्येन्द्रिय मिदं पयो
ऽमृतं मधु॥ *ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्राय नमः शुक्र मावाहयामि स्थापयामि।*

शनि का आवाहन करें – शनि (SATURN)(West) पश्चिम में – काला।

ॐ शंनो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि श्रवन्तु नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शनैश्चराय नमः शनि मावाहयामि स्थापयामि।

राहुका आवाहन करें – राहु (NORTH NODE)(S.W.) नैर्ऋत्य में – काला।

ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधाः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥

ॐ भूर्भुवः स्वः राहवे नमः राहु मावाहयामि स्थापयामि।

केतु का आवाहन करें – केतु (SOUTH NODE)(N.W.) वायव्य में – काला।

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेश से। समुषद्भिरजायथाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः केतवे नमः केतु मावाहयामि स्थापयामि।

इस प्रकार आवाहन के बाद हाथ में अक्षत लेकर मण्डल पर छोड़ते हुये निम्नोक्त मन्त्र से भावना करें कि मन्त्र बल से ग्रह साक्षात जीवन्त हो कर यहां उपस्थित हो रहे हैं।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ꣳ

समिमं दधातु। विश्वेदेवां स इह मादयन्तामों – ३ प्रतिष्ठः॥

ॐ आवाहित सूर्यादि नवग्रहदेवेभ्यो नमः॥

प्राण प्रतिष्ठा के बाद पूर्वोक्त क्रमानुसार पञ्चोपचार अथवा षोडशोपचार पूजन कर निम्न प्रार्थना बोलनी चाहिए।

॥ नवग्रह प्रार्थना॥

ॐ ब्रह्मा मुरारी स्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।

गुरूश्च शुक्रः शनि राहु केतवः, सर्वे ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु॥

सूर्यः शौर्य मथेन्दु रुच्च पदवीं, संमङ्गलं मङ्गलः, सद्बुद्धिं च बुधो गुरूश्च

गुरुतां, शुक्रः सुखं शं शनिः। राहुर्बाहु बलं करोतु सततं, केतुः

कुलस्योन्नतिं। नित्यं प्रीति करा भवन्तु मम ते, सर्वे ऽनुकूला ग्रहाः॥

कृतेन अनेन पूजनेन, सूर्यादि नवग्रहः प्रियतां न मम्॥

बोलो सूर्यादि नवग्रह देव की जय॥

सर्वदेव प्रार्थना ॥

ॐ नमो ऽस्त्वनन्ताय सहस्त्र मूर्तये सहस्त्र पादाक्षि शिरो रूबाहवे ।

सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्र कोटी युग धारिणे नमः ॥

अनेन अस्माभिकृतेन पूजनेन गणपत्याद्यवहिता देवताः सन्तुष्टाः वरदाः शान्तिदाः भवन्तु ।

॥ अथ श्री सत्य नारायण पूजन विधि ॥

भगवान सत्य नारायण की पूजा स्वर्ण मयी प्रतिमा अथवा शालिग्राम शिला के रूप में की जाती है । मण्डप के बीचो बीच अष्टदल कमल के ऊपर प्रधान कलश में पूर्ण पात्र रखकर उसके ऊपर प्रतिमा स्थापित की जाती है । शालिग्राम में भगवान की नित्य सन्निधि रहती है अतः उस में आवाहन प्रतिष्ठा एवं विसर्जन नहीं होता है, किन्तु धातुमयी प्रतिमा को अग्न्युत्तारण कर उसमें प्राण प्रतिष्ठा की जाती है ।

॥ अग्न्युत्तारण विधि ॥

प्रतिमा अथवा यन्त्र को शुद्ध धृत से लेपन कर उसे एक बर्तन में रखें तथा उसके ऊपर दुग्ध और जल की धारा देते हुये मन्त्र बोलें -

ॐ प्राणदा अपानदा व्यानदा व्वर्चोदा व्वरिवोदाः ।

अन्यास्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ꣳ शिवोभव ॥

॥ प्राण प्रतिष्ठा ॥

यन्त्र अथवा मूर्ति को कपड़े आदि से पोंछ कर अन्य पात्र में रखें तथा दायें हाथ से मूर्ति या यन्त्र का स्पर्श कर भावना करें कि यन्त्र आदि सजीवता को प्राप्त हो रहे हैं ।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं सः ।

सोऽहं अस्याः अमुकदेव प्रतिमायाः प्राणा इह प्राणाः ।

ॐ आं॰ अस्याः अमुक अमुकदेव प्रतिमायाः जीव इह स्थितः ।

ॐ आं० अस्याः अमुक अमुकदेव प्रतिमायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वा । घ्राणपाणिपाद पायूपस्थानि इहै वागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥

हाथ में पुष्प लेकर भावना करें की मूर्ति या यन्त्र संजीवता को प्राप्त हो रही है ।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ꣳ समिमं दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्तामों - २ प्रतिष्ठः ॥

॥ आवाहनम् ॥ ॐ सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमि ꣳ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठ द्दशाङ्गुलम् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः आवाहनम् समर्पयामि ।

स्वागतार्थ पुष्पाक्षत निवेदित करें -

॥ आसनम् ॥ ॐ पुरुष एवेद ꣳ सर्व यद्भूतं यच्च भव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्ने नाति रोहति ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि ॥

॥ पाद्यम् ॥ ॐ एता वानस्य महिमातो ज्या याँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः पादयोर्पाद्यम समर्पयामि ॥

॥ अर्घ्यम् ॥ ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादो ऽस्येहाभवत् पुनः ।
ततो विष्वङ्ग व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः हस्तयोरर्घ्यम् समर्पयामि ॥

॥ आचमनीयम् ॥ ॐ ततो विराड़ जायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमि मथो पुरः ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि

॥ स्नानम् ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूंक्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः सवाङ्गे स्नानीयम् जलं समर्पयामि ॥

॥ दुग्ध स्नानम् ॥ ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः दुग्ध स्नानम् समर्पयामि ॥ पुनः जल स्नानम् ॥

॥ दधि स्नानम् ॥ ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयू ꣳ षीतारिषत् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः दधि स्नानम् समर्पयामि ॥ पुनः जल स्नानम् ॥

॥ घृत स्नानम् ॥ ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसा पावानः पिबतान्त रिक्षस्य
हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः
स्वाहा ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः घृत स्नानम् समर्पयामि ॥ पुनः जल स्नानम् ॥

॥ मधु स्नानम् ॥ ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः
सन्तोषधीः। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ꣳ रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ - २
अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः मधु स्नानं समर्पयामि ॥ पुनः जल स्नानम् ॥

॥ शर्करा स्नानम् ॥ ॐ अपा ꣳ रस मुद्वयस ꣳ सूर्ये सन्त ꣳ समाहितम्। अपा ꣳ
रसस्य यो रसस्तं वो गृहणाम्युत्तममुपयाम गृहीतो ऽ सीन्द्राय
त्वा जुष्टं गृह्णामेष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्ट तमम् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः शर्करा स्नानम् समर्पयामि ॥ पुनः जल स्नानम् ॥

॥ पञ्चामृत स्नानम् ॥ ॐ पञ्चनद्यः सरस्वती मपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥

पयो दधि घृतं चैव, मधु शर्करयान्वितं।

पञ्चामृतं मयानीतं, स्नानार्थम् प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि ॥ पुनः जल स्नानम् ॥

॥ शुद्धोदक स्नानम् ॥ ॐ शुद्धवालः सर्व शुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा

अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं, गङ्गाजलसमं स्मृतम्।

समर्पितं मया भक्तया, स्नानार्थम् प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥

॥ वस्त्रम् ॥ ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये केचो भयादतः।

छन्दा ꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्माद् जायत ॥

शीतवातोष्ण संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः वस्त्रं समर्पयामि ॥

॥ उपवस्त्रम् ॥ *उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।*

भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः उपवस्त्रं समर्पयामि ॥

॥ आभूषणम् ॥ *वज्रमाणिक्य वैदूर्य मुक्तां विद्रुम मण्डितं।*

पुष्पराग समायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः आभूषणं समर्पयामि ॥

॥ यज्ञोपवीतम् ॥ ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये केचो भयादतः।

गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्मा ज्जाता अजावयः ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥

॥ गन्धम् ॥ ॐ तं यज्ञं वर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।

तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः। गन्ध स्नानं समर्पयामि ॥

॥ चन्दनम् ॥ श्री खण्ड चन्दनं दिव्यं, गन्धाढयं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ, चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः चन्दनं समर्पयामि ॥

॥ सिन्दूरम् ॥ सिन्दूर मरुणाभासं, जपा कुसुम संनिभं ।

अर्पितं ते मया भक्तया, प्रसीद परमेश्वर ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः सिन्दूरं समर्पयामि ॥

॥ अक्षतान् ॥ ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत

स्वभानवो विप्रा नविष्ठयामती योजा न्विन्द्र ते हरी ॥

अक्षताँश्च सुरश्रेष्ठा, कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्तया, गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः अक्षताँ समर्पयामि ॥

ध्यान रहेः शालिग्राम पर अक्षत नहीं चढ़ाए जाते हैं। अतः श्वेत तिल अथवा कुंकुमाक्त अक्षत अर्पित करें।

॥ पुष्प माला ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।

समूढ मस्य पा ꣳ सुरे स्वाहा ॥

माल्यादीनि सुगंधीनि, मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयानीतानि पुष्पाणि, गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः पुष्पाणि पुष्पमालां समर्पयामि ॥

॥ तुलसी पत्रम् ॥ ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यक्तल्पयन्।

मुखं किमस्यासीत् किंबाहू किमुरू पादा उच्येते ॥

तुलसीं हेमरुपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम्।

भव मोक्ष प्रदां तुभ्यमर्पयामि हरि प्रियाम् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः तुलसी दलं समर्पयामि ॥

॥ *दूर्वाङ्कुरान्* ॥ ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि ॥

॥ सुगन्धित तैलम् ॥ ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुँ ज्यायाहेति परिवाधमानः।

हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ꣳ संपरिपातु विश्वतः ॥

तैलानि च सुगंधीनि द्रव्याणि विविधानि च।

मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः सुगन्धित तैलं समर्पयामि ॥

॥ अंग पूजम् ॥

ॐ अनघाय नमः	पादौ पूजयामि ।
ॐ गोपालाय नमः	गुल्फौ पूजयामि ।
ॐ जन्म रहिताय नमः	जानुनी पूजयामि ।
ॐ पूतना वैरिणे नमः	ऊरुं पूजयामि ।
ॐ शकटा शुर भंजनाय नमः	कटिं पूजयामि ।
ॐ नवनीत प्रियाय नमः	नाभिं पूजयामि ।
ॐ उत्तालताल भेत्रे नमः	उदरं पूजयामि ।
ॐ वनमालिने नमः	वक्षं पूजयामि ।
ॐ चतुर्भुजाय नमः	हस्तान् पूजयामि ।
ॐ कंसारये नमः	कण्ठं पूजयामि ।
ॐ मथुरा नाथाय नमः	मुखं पूजयामि ।
ॐ केवल सम्पत्प्रदाय नमः	कपोलौ पूजयामि ।
ॐ कंजलोचनाय नमः	कर्णौ पूजयामि ।
ॐ ललिताकृतये नमः	ललाटं पूजयामि ।
ॐ शुक संस्थिताय नमः	शिरः पूजयामि ।
ॐ ज्ञानात्मने नमः	अलकान् पूजयामि ।
ॐ सर्वेश्वराय नमः	सर्वाणि अंगानि पूजयामि ।

॥ धूपम् ॥ ॐ ब्रह्मणो ऽस्य मुख मासीद् वाहू राजन्यः कृतः ।

ऊरुतदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ꣳ शूद्रो अजायत् ॥

वनस्पति रसोद्भूतो, गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः । आघ्रेयः सर्व देवानां, धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः धूपं आघ्रापयामि ॥

॥ दीपम् ॥ ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।

श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥

साज्यं च वर्ति संयुक्तं, वाह्निना योजितं मया ।

दीपं गृहाण देवेश, त्रैलोक्य तिमिरापहम् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः प्रत्यक्ष दीपं दर्शयामि ॥

दीपक दिखाकर हाथ धोलें तथा नैवेद्य भगवान के सामने रखकर तुलसी दल डालें ।

॥ नैवेद्यम् ॥ ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णोद्यौः समवर्तत ।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां २ अकल्पयन् ॥

शर्करा खण्ड खाद्यानि, दधि क्षीर घृतानि च ।

आहारं भक्ष्य भोज्यं च, नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा ।

ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा ।

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि । पुनराचमनीयं समर्पयामि ॥

श्याम रसिया मेरे मन बसिया रुचि रुचि भोग लगाओ रसिया

१ ॥ दुर्योधन के मेवा त्याग्यो साग विदुर घर खायो रसिया रुचि रुचि भोग -

२ ॥ शवरी के वेर सुदामा के तंडुल माँग माँग हरि खायो रसिया रुचि रुचि -

३ ॥ राधा रानी के मन मे बसगयो औरन को हर्षायो रसिया रुचि रुचि -

४ ॥ जो मेरे श्याम को भोग लगावे छूट जाय लख चौरसिया रुचि रुचि -

५ ॥ सूर श्याम बलिहारि चरण की हृदय कमल में रहो बसिया रुचि रुचि .

॥ ऋतु फलम् ॥ ॐ या फलिर्नि या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्तां नो मुञ्चन्त्व ꣳ हसः॥
इदं फलं मया देव, स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफला वाप्तिर्भवे जन्मनि जन्मनि॥
ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः ऋतु फलं समर्पयामि॥

॥ ताम्बूलम् ॥ ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत।
वसन्तो ऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥
पूगीफलं महद्दिव्यं, नागवल्ली दलैर्युतम्।
एला लवङ्ग संयुक्तं, ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः एला लवङ्ग पूगीफल युत ताम्बूलं समर्पयामि॥

॥ हस्तौ प्रक्षाल्य ॥ *हृशीकेशाय नमः हस्तौ प्रक्षाल्य॥*

॥ द्रव्य दक्षिणा ॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
दक्षिणा प्रेमसंयुक्ता, यथाशक्ति समर्पिता।
अनन्त फलदामेमां, गृहाण परमेश्वर॥
ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः पूजाया षाड्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि॥

श्री विष्णु अर्चना –

जिस प्रकार भगवान शंकर को अभिषेक भगवती देवी को हवन प्रिय है उसी प्रकार भगवान विष्णु को अर्चना प्रिय है। अर्चना चावलों या फूल की पंखुड़ियों के द्वारा अथवा सिक्कों से भी की जाती है। एक एक मन्त्र के साथ नम बोलते हुए अर्च्य द्रव्य भगवान के चरणों में समर्पित करना चाहिए॥

॥ अर्चना – श्री विष्णु स्तोत्र शत नामावलिः ॥

१	ॐ विश्वस्मै नमः।	२	ॐ विष्णवे नमः।
३	ॐ वषट्काराय नमः।	४	ॐ भूत भव्य भवत्प्रभवे नमः।
५	ॐ भूतकृते नमः।	६	ॐ भूतभृते नमः।
७	ॐ भावाय नमः।	८	ॐ भूतात्मने नमः।
९	ॐ भूत भावनाय नमः।	१०	ॐ पूतात्मने नमः।
११	ॐ परमात्मने नमः।	१२	ॐ मुक्तानां परमगतये नमः।
१३	ॐ अव्ययाय नमः।	१४	ॐ पुरुषाय नमः।
१५	ॐ साक्षिणे नमः।	१६	ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः।
१७	ॐ अक्षराय नमः।	१८	ॐ योगाय नमः।
१९	ॐ योगविदां नेत्रे नमः।	२०	ॐ प्रधान पुरुषेश्वराय नमः।
२१	ॐ नारसिंह वपुशे नमः।	२२	ॐ श्रीमते नमः ।
२३	ॐ केशवाय नमः।	२४	ॐ पुरुषोत्तमाय नमः।
२५	ॐ सर्वाय नमः।	२६	ॐ शर्वाय नमः।
२७	ॐ शिवाय नमः।	२८	ॐ स्थाणवे नमः।
२९	ॐ भूतादये नमः।	३०	ॐ अव्यय निधये नमः।
३१	ॐ सम्भवाय नमः।	३२	ॐ भावनाय नमः।
३३	ॐ भर्त्रे नमः।	३४	ॐ प्रभवाय नमः।
३५	ॐ प्रभवे नमः।	३६	ॐ ईश्वराय नमः।
३७	ॐ स्वयम्भुवे नमः।	३८	ॐ शम्भवे नमः।

३९	ॐ आदित्याय नमः।	४०	ॐ पुष्कराक्षाय नमः।
४१	ॐ महास्वनाय नमः।	४२	ॐ अनादि निघनाय नमः।
४३	ॐ धात्रे नमः।	४४	ॐ विधात्रे नमः।
४५	ॐ उत्तम धातवे नमः।	४६	ॐ अप्रमेयाय नमः।
४७	ॐ हृषीकेशाय नमः।	४८	ॐ पद्मनाभाय नमः।
४९	ॐ अमर प्रभवे नमः।	५०	ॐ विशव कर्मणे नमः।
५१	ॐ मनवे नमः।	५२	ॐ त्वष्ट्रे नमः।
५३	ॐ स्थविष्ठाय नमः।	५४	ॐ स्थविर ध्रुवाय नमः।
५५	ॐ अग्राह्याय नमः।	५६	ॐ शाश्वताय नमः।
५७	ॐ कृष्णाय नमः।	५८	ॐ लोहिताक्षाय नमः।
५९	ॐ प्रतर्दनाय नमः।	६०	ॐ प्रभूताय नमः।
६१	ॐ त्रिककुब्धाम्ने नमः।	६२	ॐ पवित्राय नमः।
६३	ॐ मंगलपराय नमः।	६४	ॐ ईशानाय नमः।
६५	ॐ प्राणदाय नमः।	६६	ॐ प्राणाय नमः।
६७	ॐ ज्येष्ठाय नमः।	६८	ॐ श्रेष्ठाय नमः।
६९	ॐ प्रजापतये नमः।	७०	ॐ हिरण्य गर्भाय नमः।
७१	ॐ भू गर्भाय नमः।	७२	ॐ माधवाय नमः।
७३	ॐ मधुसूदनाय नमः।	७४	ॐ ईश्वराय नमः।
७५	ॐ विक्रमिणे नमः।	७६	ॐ धन्विने नमः।
७७	ॐ मेधाविने नमः।	७८	ॐ विक्रमाय नमः।
७९	ॐ क्रमाय नमः।	८०	ॐ अनुत्तमाय नमः।

८१	ॐ दुराधर्षाय नमः।	८२	ॐ कृतज्ञाय नमः।
८३	ॐ कृतये नमः।	८४	ॐ आत्मवते नमः।
८५	ॐ सुरेशाय नमः।	८६	ॐ शरणाय नमः।
८७	ॐ शर्मणे नमः।	८८	ॐ विश्वरेतसे नमः।
८९	ॐ प्रजाभवाय नमः।	९०	ॐ अह्ने नमः।
९१	ॐ संवत्सराय नमः।	९२	ॐ व्यालाय नमः।
९३	ॐ प्रत्ययाय नमः।	९४	ॐ अजाय नमः।
९५	ॐ सर्वदर्शनाय नमः।	९६	ॐ सर्वेश्वराय नमः।
९७	ॐ सिध्दाय नमः।	९८	ॐ सिध्दये नमः।
९९	ॐ सर्वादये नमः।	१००	ॐ अच्युताय नमः।
१०१	ॐ वृषाकपये नमः।	१०२	ॐ अमेयात्मने नमः।
१०३	ॐ सर्व योगविनिः सृताय नमः।	१०४	ॐ वसवे नमः।
१०५	ॐ वसु-मनसे नमः।	१०६	ॐ सत्याय नमः।
१०७	ॐ समात्मने नमः।	१०८	ॐ सम्मिताय नमः।
१०९	ॐ समाय नमः।	११०	ॐ अमोधाय नमः।
१११	ॐ वृषकर्मणे नमः।	११२	ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः।

ॐ नमो ऽस्त्वनन्ताय सहस्त्र मूर्तये सहस्त्र पादाक्षि शिरो रूबाहवे।

सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्र कोटी युग धारिणे नमः

संक्षिप्त वैदिक आरती ॥ सर्व प्रथम चरणों में **चार बार,** नाभि में **दो बार,** मुख मण्डल में **एक बार,** आरती करने के बाद समस्त अंगों की सात बार आरती होती है। फिर शंख में रखे हुवे जल को भगवान के चारो ओर घुमा कर उन्हें निवेदित करना चाहिए॥

मन्त्रः- ॐ इद्ꣳ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरꣳ सर्वगणꣳ स्वस्तये।

आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभय सनि।

अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयोरेतो अस्मासु धत्त॥

ॐ श्री सत्य नारायण आरार्तिक्यं समर्पयामि॥

॥ स्तुति प्रार्थना॥

हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करें।

ॐ शान्ताकारं भुजग शयनं, पद्मनाभं सुरेशम्।

विश्वाधारं गगनसदृशं, मेघवर्णम् शुभांगम्।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं, योगिभिर्ध्यान गम्यम्।

वन्दे विष्णुं भवभय हरं, सर्व-लोकैक नाथम्॥

विशेष - यदि मात्र पूजन हो तो यहीं पर मन्त्र पुष्पाञ्जलि करनी चाहिए।

॥ पुस्तक पूजा॥ या कुन्देन्दु तुषार हार धवला या शुभ्र वस्त्रावृता।

या वीणा वर दण्ड मण्डित करा या श्वेत पद्माशना॥

या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृति भिर्देवैसदा वन्दिता।

सा मां पातु सरस्वती भगवती निश्शेष जाड्यापहा॥

श्री सरस्वत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि॥

॥ व्यास पूजनम्॥

नमोस्तुते व्यास विशालबुद्धे फुल्लार विन्दायतप त्रिनेत्र।

येन त्वया भारततैल पूर्ण प्रज्बालितो ज्ञानमय प्रदीपः॥

॥ मंगला चरण ॥

विध्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

यो ऽन्तः प्रविश्य ममवाच मिमां प्रसुप्ताम् । सञ्जीवयत्यखिल शक्तिधर स्व धाम्ना ॥
अन्याश्च हस्त चरणौ श्रवण त्वगादीन् । प्राणान्नमो गवते पुरुषाय तुभ्यम् ॥

तत्रैव गङ्गा यमुना त्रिवेणी गोदावरी सिन्धु सरस्वती च ।
सर्वाणि तीर्थानि वसन्ति तत्र यत्राच्युतोदार कथा प्रसंगः ॥

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देविं सरस्वतीं व्यासं ततो जय मुदीरयेत् ॥

यं शैवा समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्ति नो ।
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाण पटवः कर्तेति नैय्यायिका
अर्हन्नित्य थ जैन शासनरता कर्मेति मीमांसका ॥
सो ऽयं वो विदधातु वाँछित फलं त्रैलोक्य नाथो हरिः ॥

ॐ तत्सत श्री नारायण तू पुरुषोत्तम गुरु तू ।
सिद्ध बुद्ध तू स्कन्द विनायक सविता पावक तू ।
रुद्र विष्णु तू राम कृष्ण तू रहीमताओ तू ।
वासुदेव गो विश्वरुप तू चिदानन्द हरि तू ॥
अद्वितीय तू अकाल निर्भय आत्म लिंग शिव तू ॥

श्री सत्य नारायण व्रत कथा - पद्य मे ॥

प्रथमो ऽध्यायः ॥

असमर्थ जीवों पर प्रभु की अहैतुकी कृपा ॥

दोहा - मुक्ति धाम कलिकाल में, नैमिषारण्य है धाम ।

सन्त वहां रहकर सदा, जपते हरि का नाम ॥

एक बार नैमिषरण्य तीरथ, अठ्ठासी हजार ऋषि मुनि ।

एकत्रित होकर सभा करी, कैसे सुखि हो मानव योनि ॥

थे सूत ब्रह्मज्ञानी प्रसिद्ध, और विविध विषय के ज्ञाता थे ।

थे वेद पुराणों के पण्डित, जनमन के जो निर्माता थे ॥

सन्त सभा निश्चय करके, सनकादिक ऋषि मुनिगण सारे ।

जिज्ञासा लिये वहीं पहुँचे, थे सूत जहाँ आसन मारे ॥

उनसे सब ऋषि मिलकर बोले, इक बात सूत जी बतलायें ।

कल्याण जगत के पतित, प्राणियों का हो कैसे समझावें ॥

दोहा - ऋषियों की सुन बात यह, बोले सूत सुजान ।

धन्य जन्म है आपका, धन्य आपका ज्ञान ॥

अत्यन्त सरल मनवांछित फल, दाता व्रत को बतलाते हैं ।

भगवान विष्णु और नारद का, सम्वाद तुम्हें समझाते हैं ॥

दोहा - एक दिवस वीणा लिये, करते हरि गुण गाण ।

मृत्यु लोक में आगये, नारद चतुर सुजान ॥

सब दुख से पीड़ित नर नारी, जब उनको सभी नजर आये।

अत्यन्त उन्हें यह खेद हुआ, मन ही मन वे अति घबराये॥

सोचा इनके दुख हरने का, अब कौन उपाय निकालें हम।

क्यों ना जाकर के विष्णु पुरी, भगवान से जरा सलाह लें हम॥

संहार शक्ति है शंकर में, ब्रह्मा जी रचने वाले हैं।

पालन कर्ता हैं रमानाथ, जो दुःख शोक को हरते हैं॥

हैं विष्णु पिता इस दुनिया के, वह ही जग पालन करते हैं।

प्राणी हैं जितने जड़ चेतन, वह ध्यान उन्हीं का धरते हैं॥

दोहा - मृत्यु लोक से पल भर में, कर के हरि का ध्यान।

नारद जी पहुँचे वहाँ, जहाँ विष्णु भगवान॥

नारद जी के द्वारा स्तुतिः-

मन वाणी से परे निर्गुण हो, सगुण शक्ति के सिन्धु अनन्त।

आदि न मध्य न अन्त, आपको करता हूँ प्रणाम भगवन्त॥

भक्तों के भय दुख विनाशक, सबके आदि और आधार।

अपरम्पार तपोधन भगवन, नमस्कार हो बारम्बार॥

दोहा - आते देखे देव ऋषि, करते हरि गुणगान।

स्वागत को सादर उठे, कमला पति भगवान॥

तब दीन बन्धु श्री नारायण, प्रभु मन्द मन्द मुस्काते हैं।

नारद के भक्ति भरे बचनों को, सुन सुन कर हर्षाते हैं॥

नारद के मन की बात तभी, थे जान गये लीला धारी।

फिर भी मर्यादा रखने को, बोले सप्रेम जग हितकारी ॥
इस समय अचानक आने का, ऋषि देव मुख्य क्या कारण है।
हे सन्त यहाँ तक आने का, उद्देश्य क्या आसाधारण है ॥
कर जोड़ कहा तब नारद ने, प्रभु आप सभी कुछ ज्ञाता हैं।
तीनो लोकों के जीव जन्तुओं, प्राणियों के भाग्य विधाता हैं ॥
मृत्यु लोक के जीव दुखारी, संकट हरो संकट हारी।
दीन दयाल भक्त हितकारी, रक्षा कीजे भव भय हारी ॥
ये सुन बोले श्री नारायण, नारद इक व्रत समझाता हूँ।
श्री सत्य नारायण स्वामी का, पूजन व्रत बतलाता हूँ ॥
सतयुग में जो फल मिलता था, जप त्याग और तप साधन से।
कलियुग में वही सुगम होता, श्री सत्य देव आराधन से ॥
इस व्रत की विधि सुनिये नारद, जैसा मैं तुम्हें बताता हूँ।
पूजन वैसे ही हो जग में, जैसा कि मैं समझाता हूँ ॥
जब जी चाहे संकल्प करो, सारी तिथियां शुभ भाव मयी।
पर सारा साधन निष्फल है, यदि पूजन में सद्भाव नहीं ॥
चंचल मन को बस में करके, नारायण से अनुराग करें।
काम क्रोध और लोभ मोह, हिंसा का मन से त्याग करें ॥
कर शुद्ध स्वयं अपने मन को, ऊंचे से सुन्दर आसन पर।
श्री सत्य देव नारायण की, प्रतिमा का प्रेमी वाहन कर ॥
सब विधि विधान के साथ करें, अर्चन सहज ही चित देकर।

अक्षत चन्दन नैवेद्य नारियल, पान पुष्प माला लेकर ॥

घृत दूध दही बूरा मद आदि, चित्तानुसार कर संयोजन ।

कदलीफल ऋतुफल आदि जुटा, फिर प्रेम पूर्वक कर पूजन ॥

सुन कथा सत्य नारायण की, प्रभु प्रेम सहित महिमा गायें ।

ब्राह्मण को आदर सहित दक्षिणा, देकर भोजन करवायें ॥

जो भक्ति भाव से कथा सुने, उसकी इच्छा पूरी होती ।

होती है सदा विजय उसकी, पाते वह मानस का मोती ॥

दोहा - इस प्रकार जो प्रेम से, कथा सुने मनलाय ।

निश्चय ही उस भक्त का, क्लेश दुख मिट जाय ॥

बोलो श्री सत्य नारायण भगवान की जय ॥

तेरे दर्शन से भगवान

तेरे दर्शन से भगवान हुआ मुझ को आनन्द महान ।

१ जिस ने तेरा ध्यान लगाया उसने मोक्ष पदारथ पाया ।

करलिया अत्मा का कल्याण । हुआ मुझ को आनन्द महान ।

२ मुझ को शान्ति छवि दिखलाई । भगवन यह मेरे मन भाई ।

तेरा दर्शन सुख की खान । हुआ मुझ को आनन्द महान ।

३ तुम हो दीनानाथ दयाल । करते हो करूणा प्रतिपाल ।

तुम्हारा है जग मे गुण गान । हुआ मुझ को आनन्द महान ।

४ यह भक्त शरण मे आया । अंग फूला नही समाया

देख कर तेरी निराली शान । हुआ मुझ को आनन्द महान ॥

द्वितीयो ऽध्यायः ॥

जीवों के सत्कर्मों का परिणाम तथा प्रभु की भाव प्रियता ॥

दोहा – परम मगन ऋषि देख कर, हरषे सूत सुजान।
श्रद्धा पूर्वक करो तुम, सरस कथा का पान ॥

सब ध्यान पूर्वक सुनो ऋषि, यह कथा अपूर्व निराली है।
श्रद्धा भक्ति से किये व्रत का, परिणाम बताने वाली है ॥

था एक ब्राह्मण सतानन्द, जो काशीपुर में रहता था।
नित भिक्षा वृति करके भी, भर पेट न भोजन पाता था ॥

यों देख दीन को दीनबन्धु, उस द्विज पर दया दिखाते हैं।
बूढ़े ब्राह्मण का वेष धर, उसके सन्मुख झट आते हैं ॥

भक्तों का मान बढ़ाने को, हरि रूप अनेकों धरते हैं ॥
अपने भक्तों के क्षण भर में, दुख दर्द ताप को हरते हैं ॥

दोहा – बृद्ध रूप में उस समय, बोले दया निधान।
हे द्विजवर जी बतलाइये, संकट कौन महान ॥

दोहा – द्विज बोले हम दीन हैं, सुनिये अब नर नाह।
भिक्षा के द्वारा हे प्रभु, करता हूँ निरवाह ॥

बोला ब्राह्मण हे विप्रराज, ऐसा कुछ तो समझा दीजे।
जिस से मेरे दुख पाप कटें, भगवान निरन्तर उर में बसें ॥

तब वृद्ध रूप भगवान स्वयं, उस दुखिया ब्राह्मण से कहते।

व्रत पूजन से जिस सत्य देव के, कर्म जनित बन्धन कटते ॥

दोहा - नारद को जैसे ईश ने, व्रत का किया बखान।

उसी भांति कहकर प्रभु, हो गये अन्तर ध्यान ॥

तब ब्राह्मण ने संकल्प किया, मैं भी पूजन करवाऊंगा।

व्रत रख कर सत्य नारायण का, अपना हर कष्ट मिटाऊंगा ॥

संकल्प किया मैं नगरी में, जो कुछ भी भिक्षा पाऊंगा।

भगवान के चरणों में अर्पण, करके पूजन करवाऊंगा ॥

भगवान की महिमा से उस दिन, भरपूर अन्न धन पाता है।

तब मन में अति हर्षित होकर, पूजन सामग्री लाता है ॥

फिर ब्राह्मण बन्धु जनों के संग, व्रत रख पूजन करवाते हैं।

श्री सत्य नारायण स्वामी की, कृपा से दुख कट जाते हैं ॥

अब हर पूरण मासी को, पूजन व्रत खूब लगा करने।

हर समय सत्य नारायण का, वह उर में ध्यान लगा धरने ॥

फिर बोले सूत ऋषि मुनियों, जो ये पूजन करवाता है।

मन वांछित फल पाकर प्राणी, सुख शान्ति स्वयं अपनाता है ॥

तब ऋषि मुनि बोले सारे, उस ब्राह्मण से किसने सुनकर।

कल्याण किया है औरों का, व्रत रखकर पूजन करवा कर ॥

तब सूत ऋषि बोले ऋषियों, इक दिन ब्राह्मण परिवार सहित।

पूजन श्री सत्य नारायण का, करता था भक्ति श्रद्धा युत ॥

इतने में एक लकड़हारा कुछ भूखा प्यासा घर आया।

लकड़ी का गठ्ठा लिये हुये, द्विज के दरवाजे पर आया ॥

लकड़ी का गठ्ठा रख द्वार पर, जब वो अन्दर जाता है ।

देख के उत्सव उस घर में, मन ही मन में हर्षाता है ॥

फिर बोला वो हे ब्रह्मदेव, ये किसका पूजन करते हो ।

क्या फल पाओगे तुम इससे, जो तुम इस व्रत को धरते हो ॥

तब बोला ब्राह्मण इस व्रत को, संसार में जो भी करते हैं ।

श्री सत्य नारायण स्वामी उसके, पाप दुःखों को हरते हैं ॥

मेरा धन धान्य खुशी सारी, मेरा सारा सुखमय जीवन ।

जो कुछ भी है श्री सत्य देव की, कृपा से है मेरा कण कण ॥

दोहा - शतानन्द से जब सुना, ये सारा वृतान्त ।

सुखी लकड़हारा हुआ, बोला होकर शान्त ॥

बोला ब्राह्मण से लकड़ हारा, मुझ को भी यह समझा दीजे ।

मैं भी पूजन करवाऊंगा, मुझको भी विधि बतला दीजे ॥

ये सुन कर तुरत ही द्विजवर ने, पूजन की सब विधि बतला दी ।

व्रत आराधन की सकल क्रिया, अति प्रेम से उसको समझादी ॥

लेकर प्रसाद लकड़ हारा, श्रद्धा से उसको खाता है ।

पूजन का कर संकल्प स्वयं, वो अपने घर को जाता है ॥

लकड़ी का करके मोल तोल, वो अच्छी कीमत पाता है ।

जिससे वो सत्य नारायण की, पूजन सामग्री लाता है ॥

फिर पूजन करके लकड़ हारा, अपने हर कष्ट मिटाता है ।

सुख सम्पत्ति पाकर के जग में, वो मोक्ष धाम को जाता है ॥

दोहा – नींच ऊंच कुल वर्ण का, वहां नहीं है ध्यान।

अपने भक्तों के सदा, रक्षक हैं भगवान ॥

बोलो श्री सत्य नारायण भगवान की जय ॥

अथ तृतीयो ऽध्यायः ॥

जीव तथा ईश्वर का स्वभाव ॥

कहते हैं सूत सुनो ऋषियों, उल्कामुख राजा रहता था।

न्यायी दानी और शक्तिवान, सारा जग उसको कहता था ॥

इक रोज वो सत्य नारायण का, था प्रेम पूर्वक पूजन कर।

अपनी पत्नी परिवार सहित, भद्रशिला नदी किनारे पर ॥

इतने में एक वहां नौका लेकर, साधू बनियाँ आया।

कर जोड़ कहा उसने राजन् ,यह किसका पूजन करवाया ॥

बोला राजा यह सत्य नारायण का, पूजन हम करते हैं।

सन्तान प्राप्ति की इच्छा से हम, ध्यान प्रभु का धरते हैं ॥

श्री सत्य देव के पूजन का, वृतान्त प्रेम से बतलाया।

वह वैश्य विदा हो राजा से तब, खुशी खुशी घर में आया ॥

घर जाकर बनिया पत्नी से कहता, दुख हर लेने वाला।

व्रत सत्य नारायण स्वामी का, सन्तान दान देने वाला ॥

आओ मिलकर संकल्प करें, सन्तान जभी हम पायेंगे।

श्री सत्य नारायण स्वामी का, विधिवत पूजन करवायेंगे ॥
दिन बीते सप्ताह गये, जब नौवाँ महिना आता है।

उस साधु बनियाँ के घर पर, कन्या का जन्म तब होता है ॥
कन्या थी सुन्दर शीलवान, सबके मन को हर्षाती थी।

नव चन्द्र कला की भांति वह, कन्या नित बढ़ती जाती थी ॥
पति पत्नी दोनों ने इक दिन, जब नाम करण का काम किया।

भगवान की कला की थी कन्या, कलावती रख नाम दिया ॥
कुछ दिन गुजरे तब लीलावती, अपने पति को समझाती है।

पूजन व्रत सत्य नारायण का, करिये यह याद दिलाती है ॥
बोला बनिया हे प्रिये सुनो, कन्या का जब ब्याह रचायेंगे।

तब धूम धाम से व्रत रख कर, प्रभु का पूजन करवायेंगे ॥

दोहा - इसी भांति आनन्द में, बीत गये कुछ वर्ष।
दिन प्रति दिन आनन्द था, वैश्य हृदय में हर्ष॥

जब पुत्री ब्याहने योग्य हुई, मन चिन्ता उस व्यापारी के।

मिल जाय योग्य वर कोई, तो हों पीले हाथ कुमारी के ॥
दूतों को बुला करके बनिया, कहता तुम जल्दी से जा कर।

अपनी कन्या के हेतु योग्य, सुन्दर सा वर चुन कर लाओ ॥
आज्ञा पाकर तुरन्त दूत, कञ्चन पुर नगरी जाता है।

इक उच्च घराने का लड़का, सुन्दर सा वर ठहराता है ॥
कर उत्तम रीति से विवाह, उस वणिक ने कन्या दान किया।

वित्तानुसार मर्यादा से, सबका सब विधि सम्मान किया ॥
सन्तान हुई बनिया के घर, उसका भी ब्याह रचा डाला ।
लेकिन पूजा ना हुई कभी, श्री सत्य देव भगवान की ॥
श्री सत्य देव से विमुख हुआ, छल दम्भ कपट भरपूर किया ।
इससे नारायण रुष्ट हुए, और उसको तुरत यह श्राप दिया ॥
तुमको अपने इन कर्मों का, फल तुरन्त मिलेगा देर नहीं ।
मुंह फेरा जो तूने मुझ से, अब फिरे करम का फेर नहीं ॥
सागर तट पर रमणीक नगर, इक रत्न सार कहलाता है ।
व्यापार हेतु जिसमें बनियाँ, ले साथ जवांई जाता है ॥
जब चन्द्र केतु राजा की नगरी की, सब प्रजा सोती है ।
तब राज खजाने से प्रभु की, महिमा से चोरी होती है ॥
चोरी जब चोर चले करके, कुछ सैनिक पीछे लाग गये ।
साधु बनियाँ के पास चोर सब, माल छोड़ कर भाग गये ॥
पीछे आने वाले सैनिक, जब माल वहाँ पर पाते हैं ।
तब चोर समझ पकड़ा उनको, सब लीला है भगवान की ॥

दोहा - राज दूत आये तभी, बोले दोउ कर जोड़ ।
राजन् ये दोनों पुरुष, अपराधी हैं घोर ॥

दोहा - विनय बहुत की वणिक ने, दिया न नृप ने ध्यान ।
बन्दी गृह भेजे तुरत, होन हार बलवान ॥

अब दोनों वैश्य कारागृह में, मन ही मन मे पछताते है ।

वह माता पुत्री दोनों भी, अब भारी कष्ट उठाती हैं ॥

फिर दुःख के कारण कलावती, भिक्षा के हेतु जाती है ।

और आधी रात मुदित मन से, घर अपने वापस आती है ॥

कन्या को रात गये आये, ये देख के माँ रिसियाती है ।

क्यों अपने उत्तम कुल पर वो, व्यर्थ में दाग लगाती है ॥

बोली कन्या माँ सत्य देव की, कथा मैं सुनकर आयी हूँ ।

प्रसाद तुम्हारे खातिर भी, साथ में लेकर आयी हूँ ॥

फिर प्रेम सहित दोनों मिलकर, प्रसाद प्रभु का खाती हैं ।

व्रत पूजन करने रखने का, संकल्प हृदय में लाती हैं ॥

दोहा - हाथ जोड़ करने लगी, दोनों यही पुकार ।

हम सब की रक्षा करो, मोहन जगदाधार ॥

दोनों की श्रद्धा देख सत्य नारायण, खुश हो जाते है ।

फिर स्वसुर जवांई दोनों को, प्रभु बन्धन मुक्त कराते हैं ॥

राजा के सपनों में देखो, श्री सत्य देव जी आते हैं ।

साधु बनिया को दुगुना देकर, छोड़ो ये समझाते हैं ॥

होते ही भोर त्वरित राजा, दोनों को वहाँ बुलाता है ।

स्नान करा कर प्रेम पूर्वक, वस्त्र नये पहनाता है ॥

दोहा - पूर्व किये पापों का जलकर, दुःख हुआ अब दूर ।

विदा किया सम्मान से, दे कर धन भर पूर ॥

बोलो श्री सत्य नारायण भगवान की जय ॥

अथ चतुर्थो ऽध्यायः ॥

प्रभु की सरलता ॥

करम प्रधान विश्व करि राखा। जो जस करहिं सो तस फल चाखा ॥

दोहा - द्रव्य बहुत सा मिल गया, वैश्य रह गया दंग।

निज नगरी को चल दिया, जामाता के संग ॥

फिर स्वसुर जवांई दोनों ही, मन ही मन में हर्षाते हैं।

प्रभु कृपा से दोनों ही खुश, होकर के घर जाते हैं ॥

तब सत्य नारायण स्वामी ने, सोचा थोड़ा देखें चल कर।

कितनी है इनकी सद्बुद्धि, कुछ थोड़ा तो देखें चलकर ॥

दण्डी का रूप स्वयं धर के, श्री सत्य देव आ जाते हैं।

भिक्षा के हेतु बनिया के, आगे झोली फैलाते हैं ॥

बनिया फिर स्वयं जवांई से, कहता साधु से खतरा है।

इस साधु भिखारी से कहदो, लता पत्र की नौका है ॥

मिथ्या भाषण सुनकर के, दण्डी स्वामी जी कुछ मुस्काये।

बस "एवमस्तु" कहकर तुरन्त, नौका को छोड़ चले आये ॥

कुछ दूर पहुँचकर पानी में, नौका हल्की हो जाती है।

धास फूस की नाव देख, वनिये की मति चकराती है ॥

दोहा – ज्यों ही देखा साधु ने, यह अद्भुत चमत्कार।

शोकातुर करने लगा, तब वह हा हा कार॥

जामाता बोला बनिया से, लगते जो हमें सन्यासी थे।

मुझ को तो है विश्वास यही, वह हरि बैकुण्ठ निवासी थे॥

सुन कर वचन जामाता के, साधु को कुछ विश्वास मिला।

सचमुच मुझसे ही भूल हुई, इसके कारण ही दण्ड मिला॥

कुछ दूर नदी तट वृक्ष तले, उसने दण्डी स्वामी देखे।

मानों साकार रूप में ही, श्री हरि अन्तर्यामी देखे॥

आकर कहता प्रभु भूल हुई, हमको इस बार क्षमा करदो।

मेरी नौका में जैसा था, धन धान्य प्रभु वैसा करदो॥

तुमने माया के वश होकर, जो मेरी पूजा विसरा दी।

यह काम किया तुमने अनुचित, जो मर्यादा भी विसरा दी॥

हो मायाजाल से छुटकारा, हरि चरणों के रहुं पास सदा।

हे दीनानाथ दया कीजे, मैं शरण आपकी आया हूँ॥

अब जाओ अपनी नौका पर, मम प्रेरित माया दूर हुई।

वह लता पत्र के बदले, मणि माणिक से भरपूर हुई॥

नदी तीर साधु बनियाँ जब, नाउ पे अपनी आता है।

और पाकर भारी नौका को, मन ही मन में हर्षाता है॥

तब लाला बोले भृत्यों से, घर जाकर मेरे खबर करो।

विरह व्यथा से अकुलाये, परिजन के कष्ट को दूर करो ॥

नौकर नौका को छोड़ वहीं, बनियाँ के घर को जाता है ।

और कलावती लीलावती को, ये शुभ सन्देश सुनाता है ॥

उस समय दोनों माँ बेटी, भगवान का पूजन करती थीं ।

श्री सत्य देव नारायण का, आराधन अर्चन करती थीं ॥

लौटे सुन पति जवाँई दोनो, मन ही मन हर्षाती हैं ।

समझा करके पुत्री को, नदी तट पर मिलने जाती ॥

दोहा - मां के वचनों पर दिया किन्तु, न उसने ध्यान ।

तज प्रसाद वह भी चली, होनी है बलवान ॥

अपमान देख श्री सत्य देव, पूजन व्रत का रिसियाते हैं ।

अपनी लीला से बनिया का, जामाता लोप कराते हैं ॥

पति को ना पाकर कलावती, नैनों से नीर बहाती है ।

रोते राते बेहाल हुवी, कन्या मूर्छित हो जाती है ॥

परिस्थिति में वैश्य वणिक को, सत्य देव का ध्यान हुआ ।

संक्षिप्त रीति से पूजन कर, वह चरणों में प्रणि पात हुआ ॥

दोहा - घर जाकर पूजन अर्चन कर, पाये द्रव्य प्रसाद ।

निश्चय ही मिट जायेगा, इसका सकल विषाद ॥

दोहा - गगन गिरा सुन कर तुरत, पहुँची घर में जाय ।

प्रेम सहित प्रसाद ले, मस्तक लिया नवाय ॥

खाकर प्रसाद कलावती जब, नदियां तट पर जाती है ।

नौका पर अपने पिता सहित, वो अपने पति को पाती है ॥

फिर चारो मिलकर घर आये, सामान सभी कुछ अपना कर ।

श्री सत्य नारायण स्वामी का, पूजन करते व्रत रखवाकर ॥

दोहा - इस भांति कर्म के भोग का, सब को मिलता दण्ड ।

तो भी करुणा निधि प्रभु, कृपा करते अविलम्ब ॥

बोलो श्री सत्य नारायण भगवान की जय ॥

अथ पञ्चमो ऽध्यायः ॥

परमात्मा की समत्व दृष्टि ॥

सकल विश्व यह मोर उपाया । सब पर मोरी बराबरी दाया ॥

दोहा - भक्ति भाव को देख कर, बोले सूत सुजान ।

ऋषि वर्ग अब तुम सुनो, छोटा सा आख्यान ॥

एक समय तुंगध्वज राजा, भू पर शासन करता था ।

वह न्याय मूर्ति वैभवशाली, सब कष्ट प्रजा के हरता था ॥

इक रोज वो राजा जंगल में, करने शिकार को जाता है ।

जब मिला नहीं शिकार राजा, तब पेड़ तले सुस्ताता है ॥

एक सघन वट वृक्ष तले, कुछ ग्वाले पूजा करते थे ।

श्री सत्य देव नारायण का, श्रद्धा से अर्चन करते थे ॥

पूजन को देख कर भी राजा, अपना अभिमान भुला न सका ।

अभिमानी अश्व पर हो सवार, श्रद्धा से शीश झुका न सका ॥

पर सत्य देव नारायण कब, अभिमान को आश्रय देते हैं।

अभिमानी दर्पी दम्भी का वह, पल में मद हर लेते हैं॥

पूजन करके प्रसाद स्वयं, राजा को जाकर दे आये।

पर पद गर्वित उस राजा ने, प्रसाद त्याग कर दुःख पाये॥

अभिमान देख कर राजा का, श्री सत्य देव रिसियाते हैं।

धन राज्य सब पुत्रों का उसके, पल में नष्ट कराते हैं॥

तब देख के अपना तहस नहस, राजा ने पश्चाताप किया।

सोचा शायद प्रभु पूजन का, प्रसाद जो मैं ने त्याग दिया॥

इस कारण रूठे सत्य देव, मैं जाकर उन्हें मनाऊंगा।

पूजन करवा कर ग्वालों से, प्रसाद उन्हीं से खाऊंगा॥

ऐसा विचार कर जा पहुंचे, और सत्य देव का यजन किया।

श्रद्धा भक्ति से नत मस्तक हो, अर्चन पूजन गुणगान किया॥

श्री सत्य देव की अनुकम्पा से, उसके संकट दूर हुए।

धरती के सब वैभव भोगे, निर्मल उसके आचार हुए॥

जो जन सत्य नारायण का यह, दुर्लभ पूजन करता है।

उज्जवल कीर्ति अर्जित करके, वह विष्णु लोक को जाता है॥

दोहा - मुनियों से कहने लगे, ऋषिवर सूत सुजान।

पहले वर्णित भक्तों का, सुनो अन्य आख्यान॥

शतानन्द द्विज श्रेष्ठ जिसने, सत ध्यान लगाया था।

द्वापर में वही सुदामा बन, श्री कृष्ण मित्र कहलाया था॥

वह लकड़ हारा त्रेता युग में, था भील राज निषाद हुआ।

भगवान राम के दर्शन से, जिसको था परमानन्द हुआ॥

उल्कामुख राजा दशरथ बन, श्री रंग नाथ को पूजा था।

बणिक हुआ मोरध्वज राजा, जिसने हरि को पाया था॥

तुङ्गध्वज नामक जो नृप थे, वह स्वयम्भु मनु कहलाये।

श्री सत्य देव नारायण की, कर भक्ति मुक्ति फल पाये॥

दोहा – मनसा वाचा कर्मणा, करें जो सद् व्यवहार।

सत्य निष्ठ मानव तरे, भव सागर दुस्तार॥

बोलो श्री सत्य नारायण भगवान की जय॥

इति श्री स्कन्द पुराण अन्तर्गत रेवाखण्ड के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ एवं पञ्चम अध्याय समाप्त हुये॥ ***"श्री सत्य नारायण अर्पणमस्तु॥"***

May you all attain purity of heart through constant selfless service? May you all shine as dynamic Karma Yogins radiating joy, peace and bliss every where. May you all rejoice in the welfare of all beings. May your minds be fixed in the Lord while your hands are in the service of humanity. May you all understand the principles and techniques of Karma Yoga. May all your actions become offerings unto the Lord. May you all attain *Kaivalya Moksha* through the practice of Karma Yoga in this very birth.

OM SHANTI, SHANTI, SHANTIH.

श्री सत्य नारायण व्रत कथा (हिन्दी)

॥ पूजन विधि ॥

व्रत करने वाला पूर्णिमा, संक्रान्ति या एकादशी के दिन, शाम को स्नान आदि से निवृत्त हो कर, पूजा स्थान में आसन पर बैठ कर श्री गणेश, गौरी, वरुण, विष्णु आदि सब देवतावों का ध्यान करके पूजन करे और संकल्प करे कि, मैं सत्य नारायण स्वामी का पूजन तथा कथा श्रवण करुंगा। पुष्प हाथों में लेकर श्री सत्य नारायण का पूजन करे। पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से युक्त होकर स्तुति करें। हे भगवान, मैं ने श्रद्धा पूर्वक फल, जल आदि सब सामाग्री आप को अर्पण की है इसे आप स्वीकार कीजिये। आपदाओं से मेरी रक्षा कीजिये। मेरा आप को बारम्बार नमस्कार है। इसके बाद श्री सत्य नारायण स्वामी का पूजन करें पश्चात कथा श्रवण करें।

॥ पहला अध्याय ॥

एक समय नैमीशारण्य तीर्थ में सौनक आदि अठ्ठासी हजार ऋषियों ने श्री सूत जी से पूछा, हे प्रभु, इस कलयुग में वेद विद्या से रहित मनुष्यों को भक्ति किस प्रकार मिलेगी तथा उनका उद्धार कैसे होगा। इस लिये, हे मुनि श्रेष्ठ, कोई ऐसा तप व व्रत कहिये जिससे थोड़े ही समय में पुण्य प्राप्त हो तथा मनो वांछित फल मिले। **सर्व शास्त्र ज्ञाता, श्री सूतजी बोलेः-** हे वैष्णवों में पूज्य, आप सब ने सर्व प्राणियों के हित की बात पूछी है। अब मैं उस श्रेष्ठ व्रत को आप लोगों से कहूँगा, जिस व्रत को नारद जी ने भगवान नारायण से पूछा था और श्री लक्ष्मी पती ने, मुनि श्रेष्ठ

नारद जी से कहा था। उसे ध्यान से सुनिये। एक समय योगी राज नारद जी दूसरों के हित की इच्छा से अनेक लोकों में घूमते हुवे मृत्यु लोक में आ पहुंचे। वहां बहुत योनियों में जन्मे हुवे प्राय सभी मनुष्यों को अपने कर्मों के द्वारा अनेक दुखों से पीड़ित देख कर किस यत्न को करने से निश्चय ही इनके दुखों का नाश हो सकेगा ऐसा मन में सोच कर विष्णु लोक को गये। वहां श्वेत वर्ण और चार भुजावों वाले देवों के ईश नारायण को (जिनके हाथों में शङ्ख, चक्र, गदा और पद्म थे, तथा वनमाला पहने हुवे थे) देखकर स्तुति करने लगे। हे भगवान, आप अत्यन्त शक्ति से भरपूर हैं। मन तथा वाणी भी आप को नही पा सकती, आप का आदि, मध्य और अंत नहीं है। आप निर्गुण स्वरूप, श्रृष्टी के आदि भूत एवं भक्तों के दुखों को नष्ट करने वाले हैं। आप को मेरा नमस्कार है। नारद जी से इस प्रकार स्तुति सुन कर विष्णु भगवान बोले कि हे मुनि श्रेष्ठ, आपके मन में क्या है। आप का यहां किस काम के लिये आगमन हुवा है, निसंकोच कहिये। तब नारद मुनि बोले, मृत्यु लोक में सभी मनुष्य, अपने अपने कर्मों के अनुसार अनेक प्रकार के दुखों से दुखी हो रहे हैं। हे नाथ, मुझ पर दया रखते हैं तो बतलाइये कि उन मनुष्यों के सब दुख थोड़े ही प्रयत्न से कैसे दूर हो सकते हैं। श्री विष्णु भगवान बोले कि, हे नारद, मनुष्यों की भलाई के लिये तुमने यह बहुत अच्छी बात पूछी है। जिस काम के करने से मनुष्य मोह से छूट जाता है वह मैं कहता हूं , सुनो। बहुत पुण्य को देने वाला स्वर्ग तथा मनुष्य लोक दोनो में दुर्लभ एक व्रत है। आज मैं प्रेम वश हो कर तुमसे कहता हूं। इस व्रत को अच्छी तरह विधी से करके मनुष्य मृत्यु लोक में सुख भोग कर मरने पर मोक्ष को प्राप्त होता है।

श्री विष्णु भगवान के वचन सुनकर नारद जी ने पूछा :- उस व्रत का क्या फल है क्या विधान है और किस ने इस व्रत को किया है और किस दिन यह व्रत करना चाहिये, कृपा करके विस्तार से बताईये।

श्री विष्णु भगवान बोले :- दुख शोक आदि को दूर करने वाला, धन धान्य को बढ़ाने वाला, सौभाग्य तथा संतान को देने वाला, सब स्थानों पर विजय कराने वाला, श्री सत्य नारायण स्वामी का यह व्रत हैं। भक्ति और श्रद्धा के साथ किसी भी दिन, शाम के समय, बंधुओं के साथ धर्म परायण होकर, पूजा करे और भक्ति भाव से स्वयं प्रसाद लें। गेहूं का चूरण शक्कर और गुंड़ ले और सब भक्षण योग्य पदार्थ जमा करके स्वयं अर्पण करें तथा बंधुओं सहित भोजन करे। नृत्य आदि का आचरण कर श्री सत्य नारायण स्वामि का स्मरण कर समस्त समय व्यतीत करे। इस तरह का व्रत करने पर मनुष्यों की इच्छा निश्चय ही पूरी होती है। विशेष कर कलि काल में पृथ्वि पर यही मोक्ष का सरल उपाय है।

श्री सत्यनारायण व्रत कथा का प्रथम अध्याय समाप्त।

॥ दूसरा अध्याय ॥

सूतजी बोलेः- हे ऋषियों, जिन्होंने पहले इस व्रत को किया है उस इतिहास को कहता हूँ, ध्यान से सुनिये। सुन्दर काशीपुरी नगरी में एक अति निर्धन ब्राह्मण रहता था। वह भूख और प्यास से बेचैन हुवा नित्य ही पृथ्वी पर भिक्षा के हेतु घूमता था। ब्राह्मणों को प्रेम करने वाले भगवान, ब्राह्मण को दुखी देख कर बूढ़े ब्राह्मण का रूप धर कर उसके पास जाकर आदर के साथ पूछते हैंः- हे ब्राह्मण तुम नित्य दुखी हुवे पृथ्वी पर क्यों घूमते हो। हे श्रेष्ठ ब्राह्मण यह सब मुझसे कहो .

मैं सुनना चाहता हूं। ब्राह्मण बोला मैं निर्धन ब्राह्मण हूँ , भिक्षा के लिये पृथ्वी पर फिरता हूं। हे भगवान अगर आप इसका कोई उपाय जानते हो तो कृपा करके मुझसे बतावो। बृद्ध ब्राह्मण (भगवान) बोले कि सत्य नारायण भगवान, मनोवाँछित फल देने वाले हैं। इस लिये हे ब्राह्मण तुम उनका पूजन करो। जिसके करने से मनुष्य सब दुखों से मुक्त होता है। ब्राह्मण को व्रत का विधान बता कर बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण करने वाले सत्य नारायण भगवान अन्तर्ध्यान हो गये। निर्धन ब्राह्मण ने सोचा कि जिस व्रत को बृद्ध ब्राह्मण ने बतलाया है, मैं उसे करूंगा। यह निश्चय करने पर रात में उसको नींद भी नही आई। वह सबेरे उठा और सत्य नारायण भगवान के व्रत का संकल्प कर के भिक्षा मांगने निकला। उस दिन उसको भिक्षा में बहुत कुछ दान में मिला जिससे उसने बन्धु बान्धुओं के साथ सत्य नारायण भगवान का व्रत और पूजन किया। व्रत करने से वह ब्राह्मण दुख से छूट कर अनेक प्रकार की सम्पतियों से युक्त हुवा। उस समय से वह ब्राह्मण हर मास, सत्य नारायण भगवान का व्रत करने लगा। इस तरह आगे जो कोई पृथ्वी पर सत्य नारायण भगवान का व्रत करेगा वह सब पापों तथा दुखों से छूट कर मोक्ष को प्राप्त होगा। इस तरह नारद जी द्वारा वर्णित श्री सत्य नारायण स्वामी का यह व्रत तुमसे कहा। हे विप्रों मैं अब और क्या कहूं। ऋषि बोले :- हे मुनीश्वर संसार में इस ब्राह्मण से सुन कर किस किस ने इस व्रत को किया हम वह सब सुनना चाहते हैं, इसके लिये हमारे मन में श्रद्धा है। सूतजी बोले :- हे मुनियों, जिस जिस ने इस व्रत को किया है वह सब सुनो। एक समय वह ब्राह्मण धन और ऐश्वर्य के अनुसार बंधु बान्धुओं के साथ श्री सत्य नारायण भगवान का व्रत करने को तैयार हुवा।

उसी समय एक लकड़ी बेचने वाला गरीब वहां आया और बाहर लकड़ियों को रख कर ब्राह्मण के मकान में गया। प्यास से दुखी लकड़हारे ने ब्राह्मण को व्रत करते देखकर नमस्कार करके पूछा कि आप यह क्या कर रहे हैं और इसको करने से क्या फल मिलता है, कृपा करके मुझसे कहिये।

ब्राह्मण ने कहाः- भक्तों की सब मनोकामना पूर्ण करने वाले, यह श्री सत्यनारायण स्वामी का व्रत है। जिन की कृपा से मेरे यहां धन धान्य आदि की वृद्धि हुवी है। ब्राह्मण से इस व्रत के बारे में जानकर लकड़हारा प्रसन्न हुवा। चरणामृत और प्रसाद लेने के बाद वह अपने घर को गया। लकड़हारे ने इस प्रकार का संकल्प किया कि आज लकड़ी बेचने से जो धन मुझे मिलेगा उस से मैं श्री सत्य नारायण स्वामी का उत्तम व्रत करुंगा। यह मन में विचार कर बृद्ध लकड़हारा लकड़ियां सर पर रख कर सुन्दर नगर में गया। उस दिन वहां पर उसे उन लकड़ियों का दाम पहले से चौगुना मिला। तब वह लकड़हारा अति हर्षित होकर पके केले के फल, शक्कर, घी और दही, गेहूं का चूरण इत्यादि, श्री सत्य नारायण स्वामी के व्रत की कुल सामाग्री को लेकर अपने घर गया। फिर उसने अपने सब भाइयों को बुला कर विधी के साथ भगवान श्री सत्य नारायण स्वामी का पूजन और व्रत किया। उस व्रत को करने से गरीब लकड़हारा धन, पुत्र आदि से युक्त हुवा और संसार के समस्त सुख भोग कर वैकुण्ठ को चला गया।

श्री सत्यनारायण व्रत कथा का दुसरा अध्याय समाप्त।

॥ तीसरा अध्याय ॥

सूतजी बोले हे मुनियों। अब आगे की कथा कहता हूं सुनो। पहले समय में

उल्कामुख नाम का एक बुद्धिमान राजा था। वह सत्यवक्ता और जितेन्द्रिय था। हर दिन देव स्थानों में जाता तथा गरीबों को धन देकर उनके कष्ठ दूर करता था। उसकी पत्नी कमल के समान मुख वाली और सती साध्वी थी। एक समय भद्रशिला नदी के तट पर उन दोनो ने श्री सत्य नारायण स्वामी का व्रत किया। उसी समय में वहां एक साधू वैश्य आया। उसके पास व्यापार के लिये बहुत सा धन था। नाव को किनारे पर ठहरा कर राजा के पास गया और राजा को व्रत करते हुवे देख कर विनय के साथ पूछा कि हे राजन, भक्ति युक्त चित से आप क्या कर रहे हैं। मेरी भी सुनने की इच्छा है। यह आप मुझे बतायें।राजा बोलाः- हे साधु अपने बंधुओं के साथ पुत्र आदि की प्राप्ति के लिये महा शक्तिवान श्री सत्य नारायण स्वामी का व्रत तथा पूजन किया जा रहा है। राजा के वचन सुनकर साधु आदर के साथ बोला, हे राजन मुझसे इसका सब विधान कहिये। मैं भी आपके कथनानुसार इस व्रत को करूंगा। मेरी भी कोई संतान नहीं है और इस से निश्चय ही होगी। राजा से सब विधान सुनकर व्यापार से निवृत होकर आनन्द के साथ घर गया। साधु ने अपनी पत्नी को संतान देने वाले व्रत का समाचार सुनाया और कहा कि यदि मेरी संतान होगी तो मैं भी इस व्रत को करूंगा। साधू ने ऐसे वचन अपनी पत्नी लीलावती से कहे। कुछ समय बाद लीलावती गर्भवती हुवी तथा दसवें महीने में एक सुन्दर कन्या का जन्म हुआ जिसका नाम कलावती रख्खा गया। तब लीलावती ने मीठे शब्दों में अपने पती से कहा कि आपने जो संकल्प किया था कि भगवान का व्रत करूंगा अब आप उसे करिये। साधू बोला हे प्रिये इसके विवाह पर करूंगा। अपनी पत्नी को आश्वासन देकर वह नगर को गया। कलावती पित्रृ गृह

में वृद्धि को प्राप्त हो गई। साधू ने जब नगर में सखियों के साथ अपनी पुत्री को देखा तब तुरन्त ही दूत को बुलाकर कहा कि पुत्री के लिये कोई सुयोग्य वर देख कर लावो। साधू की आज्ञा पाकर दूत कंचनपुर नगर पहुंचा और वहां पर बड़ी खोज कर लड़की के लिये सुयोग्य वणिक पुत्र को ले आया। उस सुयोग्य वर को देख कर साधू ने अपने भाई बंधुओं सहित अपनी पुत्री का विवाह उस के साथ कर दिया। किन्तु दुर्भाग्य से विवाह के समय भी वह व्रत को करना भूल गया। तब भगवान क्रोधित हो गये और उसे श्राप दिया कि उसे दारुण दुःख प्राप्त होगा। अपने काम में कुशल साधू बनिया अपने जमाता सहित समुद्र के समीप रत्नपुर नगर पहुंचा और वहां दोनो ससुर जमाई चन्द्रकेतु राजा के नगर में व्यापार करने लगे। एक रोज भगवान सत्यनारायण की माया से प्रेरित कोई चोर राजा का धन चुरा कर जा रहा था किन्तु पीछे से राजा के दूतों को आते देख कर चोर ने धबरा कर भागते भागते धन वहीं चुप चाप रख दिया जहां वे दोनो ससुर जमाई ठेहरे हुये थे। दूतों ने उस साधू वैश्य के पास राजा के धन को देख कर दोनो को बांध लिया और प्रसन्नता से दौड़ते हुवे राजा के समीप जाकर बोले - ये दो चोर हम पकड़ कर लाये हैं। देख कर आज्ञा दें। राजा की आज्ञा से उनको कठिन कारावास में डाल दिया गया और उनका धन राजा ने छीन लिया। उसी श्राप से उसकी पत्नी भी घर पर बहुत दुखी हुवी और घर पर जो धन रख्खा था उसे चोर चुरा कर ले गये। शारीरिक व मानसिक पीड़ा में भूख और प्यास से अति दुखित हो अन्न की चिंता में कलावती एक ब्राह्मण के घर गई। वहां उसने श्री सत्यनारायण स्वामी का व्रत होते देखा। उसने कथा सुनी और प्रसाद लेकर रात को घर आई। माता ने कलावती से

कहा - हे पुत्री दिन में कहां रही। तेरे मन में क्या है। कलावती बोलीः- हे माता मैं ने एक ब्राह्मण के घर श्री सत्य नारायण स्वामी का व्रत होते देखा। कन्या का वचन सुनकर लीलावती श्री सत्य नारायण के पूजन की तैयारी करने लगी। लीलावती ने परिवार और बान्धुओं सहित भगवान का पूजन किया और यह वर मांगा कि मेरे पति और दामाद शीघ्र ही घर आ जावें और प्रार्थना की कि हम सब का अपराध क्षमा करो। श्री सत्य नारायण भगवान इस व्रत से संतुष्ठ हो गये और राजा चन्द्रकेतु को स्वप्न में दिखाई दिये और कहा - कि हे राजन दोनो बंदी बनियों को सुबह ही छोड़ दो और उनका सब धन जो तुमने ग्रहण किया है उसे दे दो। नहीं तो तेरा धन, राज्य, पुत्रादि सब नष्ट कर दूंगा। राजा को ऐसा वचन सुनाकर भगवान अन्तर्ध्यान हो गये। सुबह होते ही राजा चन्द्रकेतु ने सभा में अपना स्वप्न सुनाया और दोनो वणिक पुत्रों को कैद से मुक्त कर सभा में बुलाया। दोनो ने आते ही राजा को नमस्कार किया। राजा मीठी वाणी में बोला हे महानुभावों भाग्यवश ऐसा कठिन दुख प्राप्त हुवा है। अब कोई भय नहीं है ऐसा कह कर राजा ने उनको नये नये वस्त्र आभूषण पहनाये तथा उनका जितना धन लिया था उस से दूना धन दिलवाकर विदा किया। दोनो वैश्य अपने घर को चल दिये।

श्री सत्यनारायण व्रत कथा का तिसरा अध्याय समाप्त।

॥ चौथा अध्याय।

सूतजी बोलेः- वैश्य ने मंगलाचरण करके यात्रा आरम्भ की और अपने नगर को चला। वैश्य के थोड़ी दूर पहुंचने पर दण्डी वेश धारी सत्यनारायण भगवान ने वैश्य से पूछाः- हे साधू तेरी नाव में क्या है। अभिमानी वणिक हंसता हुवा बोला - हे

दण्डी आप क्यों पूछते हैं। क्या धन लेने की इच्छा है। मेरी नाव में तो बेल तथा पत्ते आदि भरे हैं। वैश्य का कठोर वचन सुनकर भगवान बोले कि तुम्हारा वचन सत्य हो। ऐसा कह कर दण्डी भगवान वहां से चले गये और कुछ दूर जाकर समुद्र के किनारे बैठ गये। दण्डी के जाने पर वैश्य ने नित्य क्रिया करने के बाद नाव को ऊंची उठी देख अचम्भा किया तथा नाव में बेल पत्रादि देख कर मूर्छित हो गिर पड़ा। फिर मुर्छा खुल्ने पर बहुत शोक करने लगा। तब उसका दामाद बोला कि आप शोक ना करें यह दण्डी का श्राप है। आप को उनकी शरण में चलना चाहिये तभी हमारी मनोकामना पूरी होगी। दामाद के वचन सुनकर वह दण्डी के पास पहुंचा। भक्ति भाव से नमस्कार कर बोला मैं ने जो आप से असत्य वचन कहे थे उस को क्षमा करो ऐसा कहकर वैश्य महान शोकातुर होकर रोने लगा।

दण्डी बोलेः- हे वणिक पुत्र मेरी आज्ञा से तुम्हे बार बार दुख प्राप्त हुवा है क्यों कि तुम मेरी पूजा से विमुख हुये हो। साधू बोलाः- हे भगवान आप की माया से मोहित ज्ञानी भी आपके रुप को नहीं जानते, तब मैं अज्ञानी कैसे जान सकता हूँ। आप प्रसन्न होइये। मैं सामर्थ के अनुसार आपकी पूजा करूंगा। मेरी रक्षा करो और पहले के समान मेरी नाव को धन से भर दो। उन दोनो के भक्ति युक्त वचन सुन कर दण्डी प्रसन्न हो गये। उसकी इच्छा अनुसार वर देकर अन्तर्ध्यान हो गये। तब उन्हो ने नाव पर आ कर देखा कि नाव धन से परिपूर्ण है। फिर वह सत्यनारायण का पूजन कर साथियों सहित अपने नगर को चल दिये। जब वह अपने नगर के निकट पहुंचा तब दूत को अपने घर भेजा। दूत ने साधू के घर जाकर उसकी स्त्री को नमस्कार कर के कहा कि साधू अपने दामाद के सहित इस नगर के पास आ

पहुंचे है। ऐसा वचन सुनकर लीलावती ने बड़े हर्ष के साथ भगवान का पूजन कर पुत्री से कहा कि मैं अपने पति के दर्शन को जाती हूँ , तुम कार्य पूर्ण करके शीघ्र आना। माता के वचन सुनकर कलावती प्रसाद छोड़कर पति के पास गई। प्रसाद की अवज्ञा के कारण भगवान ने रुष्ठ होकर उसके पति को नाव सहित पानी में डुबा दिया। कलावती अपने पति को ना देख कर रोती हुवी जमीन पर गिर पड़ी। इस तरह नाव को डूबा हुवा तथा कन्या को रोता हुवा देख कर साधू दुखित होकर बोला। हे प्रभू मुझसे या मेरे परिवार से जो भूल हुवी उसे क्षमा करें। उसके दीन वचन सुनकर सत्यनारायण प्रसन्न हो गये और आकाशवाणी हुवी - हे साधू तेरी कन्या मेरे प्रसाद को छोड़ कर आई है इस लिये इसका पति अदृष्य हो गया है। यदि वह घर जाकर प्रसाद खाकर लौटे तो इसे पती अवष्य मिलेगा। आकाशवाणी से ऐसा सुनकर कलावती ने घर पहुंचकर प्रसाद खाया। लौटने पर उस ने पती के दर्शन किये। तब वैश्य परिवार के सब लोग प्रसन्न हुवे। फिर साधू ने बन्धुओं सहित भगवान सत्यनारायण का विधि पूर्वक पूजन किया। उस दिन से हर पूर्णिमा व संक्रान्ति को भगवान सत्यनारायण का पूजन करने लगा। फिर इस लोक का सुख भोग कर स्वर्ग को चाला गया।

श्री सत्यनारायण व्रत कथा का चर्तुथ अध्याय समाप्त।

॥ पांचवा अध्याय ॥

सूतजी बोले : - हे ऋषियों मैं और भी कथा कहता हूँ सुनो। प्रजा पालन में लीन तुंगध्वज नाम का एक राजा था। उसने भी भगवान का प्रसाद त्याग कर बहुत दुख पाया। एक समय वन में जा कर के पशुवों को मार कर बट वृक्ष के नीचे आया। उस ने भक्ति भाव से

ग्वालों को बन्धुओं सहित भगवान सत्यनारायण का पूजन करते देखा। राजा देख कर भी अभिमान वश न तो वहां गया और ना ही नमस्कार किया। जब ग्वालों ने उस के सामने भगवान का प्रसाद रख्खा तो वह प्रसाद को त्याग कर अपनी सुन्दर नगरी को चल पड़ा। वहां उस ने अपना सब कुछ नष्ट पाया। तो वह समझ गया कि यह सब उस प्रसाद के निरादर करने से हुवा है। तब वह विश्वास कर ग्वालों के समीप गया और विधि पूर्वक पूजन कर प्रसाद खाया। भगवान सत्य नारायण की कृपा से सब जैसा था वैसा ही हो गया तथा सुख भोग कर मरने के बाद स्वर्ग लोक को गया। जो मनुष्य इस परम दुर्लभ व्रत को करेगा भगवान की कृपा से उसे धन धान्य की प्राप्ति होगी। निर्धन धनी होता है बन्दी बन्धन से मुक्त होकर निर्भय हो जाता है। संतान हीन को संतान प्राप्त होती है। सब मनोरथ पूर्ण होकर अन्त में वैकुंठ धाम को जाता है।

जिन्होने पहले इस व्रत को किया है उनके दूसरे जन्म की कथा कहता हूँ।

वृद्ध शतानन्द ब्राह्मण ने सुदामा का जन्म लेकर, श्री कृष्ण जी की भक्ति कर के मोक्ष पाया। लकड़ हारा त्रेता युग मे भक्त राज निषाद बना एवं भगवान राम से मित्रता कर मुक्ती को प्राप्त हुआ ।उल्कामुख नाम का राजा सूर्य वंश में जनम लेकार भगवान श्री राम के पिता, दशरथ होकर वैकुण्ठ को प्राप्त हुवे। साधू वनिया ने मोरध्वज बनकर अपने पुत्र को घर आये अतिथि की सेवा में आरे से काट कर मोक्ष प्राप्त किया।

राजा तुंगध्वज ने स्वयंभू मनु होकर भगवान की भक्ति युक्त कर्म कर के मोक्ष को प्राप्त किया।

श्री सत्यनारायण व्रत कथा का पंचम् अध्याय समाप्त।

Om Shri Satya Narayanaaya Namah.

Satya Narayan is the Narayan form of Lord Vishnu.The Lord in this form is considered an embodiment of truth. Satyanarayana is worshipped by Hindus in their homes with family and friends, usually on the transitional period of the Sun and Moon a full moon of the month. In this puja people worship by reciting the gracious story of Lord Satyanarayana. This story was originally told by Lord Vishnu himself to the sage Narada for the benefit of humankind.

The Pooja or Vrata.

The vrata is explained in five chapters. The first chapter deals with the timing of the vrata and the procedure. The remaining four chapters contain three stories to reassert the greatness and benevolence of the Almighty. On the day of the vrata, one is required to fast and perform the pooja towards the evening. Vrata begins with the lighting of the lamp, a symbolic gesture of lighting the lamp of devotion in one's heart. Then we pray to Lord Ganesha, Lakshmi, Vishnu, Lord Shiva and Parvathi, the nine planets and Dashadikpaalakas including Lord Indra.

Shri Satya Narayana Katha.

CHAPTER – 1.

Shri Satyanarayana katha is from Skandha purana, Reva khanda. Suta Puraanikji was the narrator of these stories, in Neimishaaranya to the rishis led by Shounakji who were performing a yajna for the benefit of mankind. Shounakji and others now ask Suta Puranikji an important question. "When a man has a desire, how can he fulfil that ethically sound desire? By worshipping whom, by what vrata or tapas? Please let us know.

Sutaji was pleased to know that the question they asked, was for the benefit of the mankind and not for their personal benefit. Sutaji said "this question was also asked by Devarshi Naradaji to Lord Narayana Himself; Let me tell you that story.

Once Naradaji was travelling all over the worlds and finally came to Bhuloka, where he found almost everyone was suffering from one or the other misery on account of their past Karmas and were not knowing how to extricate themselves from their untold miseries which were multiplying everyday on account of their ignorance. Being a Satjana his heart felt their agonies and immediately he reached

Vaikuntha, to Lord Narayana to find the right answer for getting the people out of their miseries. The Lord Narayana smiles at him and asks the purpose of his visit, knowing that normally Naradaji does not visit Him without a purpose. Naradaji tells Him what he saw and requests Him a panacea for all such miseries. The Lord is now happy at this question from Naradaji because of Naradaji's intention of benefiting the world by seeking the right answer. The Lord said:

Yes, there is a vrata called Shri Satyanarayana vrata which is not known to the inhabitants of the Bhuloka. This is a secret and yet since your interest is the benefit of the mankind, I shall narrate to you this vrata. **This can be performed by anyone. One who does this, will get all the benefits and pleasures of this world and will eventually get Moksha too.** Now Narada wants to know more details of this vrata. The Lord says, this can be done any day, in the evening. Gather friends and relatives and perform this vrata with faith and devotion. The night should be spent in Bhajans and praise of the Lord. All those attending Pooja should be given food and respect. Thus the performer will get all his wishes fulfilled.

CHAPTER – II.

There was an old and poor Brahmin in the city of Kashi. He was a man of virtue and yet extremely poor and was always begging for the next meal. Since the Lord is Viprapriya- (means Lover of Brahmana- Brahmana means anyone on the devotional path) – He came in the guise of an old Brahmin and accosted him "Tell me my friend, what ails you?" The Brahmin replied "I am an old and very poor man. I shall be grateful if you can tell me how to get rid of this poverty which does not seem to leave me". The Lord replied "Why don't you perform Shri Satyanarayana Vrata", and He told him how to perform the Vrata.

The Brahmin now desires to do this vrata and thinking over these thoughts of the Lord he goes to bed. He could not sleep on account of these thoughts. Again in the morning he had same thoughts and he says to himself, "whatever I earn today by begging I shall use it to perform the vrata". Since the Lord likes such feelings, (Bhavena Deyam – Lord does not want our material possessions, he is won by the genuineness of our feelings) that day, he got plenty of money while begging and thus pleased, he took the necessary articles and performed the vrata.

Very soon he became rich and had all the things of the world and thereafter he started performing the vrata every month and thus he enjoyed all the pleasures of the world and finally reached the Moksha

too. Now Shaunakji and other rishis want to know how this vrata spread in the world. Also those who have heard the story, what benefits they got.

Sutaji replies: Once when this Brahmin was performing the Sri Satya Narayana Pooja there came to his house a woodcutter. He saw the pooja and wanted to know what it is and what are its fruits. The Brahmin said, "This is Sri Satyanarayana Pooja. Whatever desires you have in your mind will be fulfilled by performing this vrata. My own poverty and troubles all ended by my very decision to perform this vrata". On hearing this, the woodcutter prostrates to the Lord, takes Prasad, and decides to perform this pooja next day. He thought in his mind, "Whatever amount I get from the sale of the wood tomorrow, I will use it for the performance of the vrata." That day he sold the wood for twice the price. Happily thinking of the Lord Satyanarayana he proceeds to do this pooja, inviting his friends and relatives. Thus performing regularly he became rich and happy and finally reached Satyaloka.

CHAPTER – III.

Suta Puranikji continues the story:
Once there was a king called Ulkamukha. He was wedded to truth and sense-control. Everyday he used to go to the temple, worship the Lord, distribute alms to the needy. Once he was performing Sri Satyanarayana Vrata on the banks of a river. At that time there came a businessman in a ship loaded with precious goods. He approached the king and wanted to know the details of the pooja and also its fruits. The king said, "My friend, what we are doing is a vrata called Sri Satyanarayana Pooja. This is done with a desire to have progeny, wealth, property, etc. By this, we are worshipping Lord Narayana or Mahavishnu".

The businessman said, "Please tell me the details as to how to perform this vrata, because I would like to have children whom I have not been fortunate to have till now." The king tells him the details of the vrata and the businessman returns home. He tells the details to his wife and they decide to perform this vrata if they get a child. Sometime later his wife Lilavati became pregnant and delivered a girl who was named Kalavati. Lilavati reminded her husband about the vrata and he kept postponing it, till his daughter grew of age and was ready to be married. The father finds a suitable groom and marries her off and again forgot to perform the vrata although he had decided to do so at the time of marriage of his daughter. The Lord now wanted to remind him.

The merchant and his son-in-law were in a city called Ratnasara where king Chandraketu was ruling. There was a theft at the palace and the burglars were chased by the police. The running burglar saw these two merchants resting near a tree and they left the booty with them and ran off. The police caught the two merchants with the stolen goods and they were straight away sent to the prison. The king himself overlooked to investigate. It is this time the merchant suddenly realized that this was all on account of his forgetting the promise to the Lord. At about this time, back home both Lilavati and her daughter Kalavati lost all their belongings due to thefts at home and were rendered beggars. During one such wandering trying to find some food Kalavati sees Sri Satyanarayana Pooja being performed at one house. She goes in, hears the story and details and returns to tell her mother what had taken place. Lilavati now knows that it is their forgetting to do the Pooja that had created all these problems. Next day she calls her relatives and friends and performs the Pooja, begs for forgiveness. Accordingly, the king had a dream that the merchants were innocent and he releases them on inquiry and gives them lot of wealth.

CHAPTER – IV.

Suta Puranik continues the story: Thus released from the custody the merchants were returning home. They reached the outskirts of their town in their ship. The Lord, in order to test them, again comes in the form of an old Sanyasi and inquires as to what the load in the ship is. The merchant bluffs and says that it contains dried leaves. The sanyasi says "Tathastu". When the merchant returns to the ship he finds that it does contain now dried leaves only. He swoons and when he regains his consciousness he realizes that these are doings of the Sanyasi whom he had cursorily dismissed earlier. He seeks him out and begs for forgiveness. The ever-merciful Lord again forgives him. Now that the merchant was near the town, he sends a messenger in advance to Lilavati to let her know that they are on their way home. Lilavati tells her daughter to complete the Satyanarayana pooja and goes ahead to meet her husband. Kalavati does the pooja, but in a hurry to meet her husband, she neglects to take the Prasad; and when she nears the anchorage, she does not find the ship nor her husband. It looked to her that they both sank/drowned. She swoons and now she decides to die.

The merchant thinks that this must be on account of some fault on their part in ignoring the Lord and then and there he decides to do the pooja as a part of expiation from his side for mistakes of omission. The

Lord now pleased makes him realize that it is the daughter's oversight in not accepting the Prasad that has created this problem and if she goes back and takes the Prasad, everything would be all right.

Kalavathi returned to the altar and took Prasad with all faith and reverence. Her husband reappeared and from then onwards, they all performed Shri Satyanarayana Pooja regularly till the end of their life. Finally after death, they reached Satyaloka.

CHAPTER – V.

In the woods of Nemisharanya, Suta Puranikji continued the story, narrating the greatness of this Vrata to Shounaka and other Rishies:

In ancient times, there was a King called Tungadwaja. He was a righteous king; and yet once he ignored the Prasad of Shri Satyanarayana Pooja and had to suffer very dearly for that.

Once, this king was returning from hunting the wild animals in the forests. He rested under a tree for a while. A few yards away a small group of cowherd boys had gathered to perform Shri Satyanarayana Pooja. They did not have anything except their daily bread they were carrying and a talkative among them became their priest and they played the game of doing a pooja. At the end of the pooja, they offered the Prasad to the king who, out of contempt and pride, left it untouched.

Pretty soon all his wealth was lost; all his children died and he now knew, being a good king that this was all on account of his contempt for those children's pooja. Without any delay the king went to that very spot where the cowherd boys had done the pooja earlier, gathers them all around him, performs the Satyanarayana Pooja with all shraddha and bhakti. Thus the king again got all his wealth and kingdom and kins.

Sutaji now tells the Rishis that this Vrata is specially effective in Kaliyuga. This Lord of Lord is called Ishwara, Satyadeva, Shri Satyanarayana and by many other names. He alone has taken names and forms. One who reads this story and one who hears it will be rid of all woes and difficulties.

Iti Shri Satya Narayanaaya Namah.

॥ हवन मन्त्र ॥

॥ अथ कुश कण्डीका करणम् ॥

स्रुव पूजनम् - स्रुवका पूजन कर के सब सामग्री चढावे और हाथ जोडे।

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताव्दिसीमतः सुरचो व्वेन आवः।

सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विव्वः॥

नये काँसे के पात्र में अग्नि लाकर अपने पास रखें।

नूतन कांस्यपात्रेण अग्निमानीय स्वाभिमुखं निदध्यात्।

अग्नि जला कर उसका आवाहन करें तथा निम्न मन्त्र से अग्नि की प्रार्थना करें।

ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रति जाग्रहि त्वमिष्टा पूर्ते स ꣳ सृजेथामयं च।

अस्मिन्त् सधस्थे अध्युत्त रस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥

मुखं समस्त देवानां खांडवोद्यान दाहकम्।

पूजितं सर्व यज्ञेषु अग्नि मावाहयाम्यहम्॥

अग्नये नमः, आवाहयामि, पूजयामि, नमस्करोमि च॥

कर्पूर जला कर निम्न मन्त्र से अग्नि प्रज्वलित करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना, पृथिवीव वरिम्णा।

तस्यास्ते पृथिवि देव यजनि, पृष्ठे ऽग्नि मन्नादमन्ना द्यायादधे॥

अग्नये नमः, आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि च॥

हाथ जोड कर अग्नि का पूजन करें।

ॐ अग्नि दूतं पुरोदधे हव्यावाह मुपब्रुवे। देवाँ आसादयादिह॥

एक एक समिधा को बीच में पकड़ कर दोनो ओर धी में डुबो कर निम्न मन्त्रों से तीन समिधायें दें।

॥ १॥ ॐ अयन्त इध्म आत्मा, जात वेदस्तेने ध्यस्व वर्धस्व।
चेद्धवर्धय चास्मान् प्रजया, पशुभिर्ब्रह्म वर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा॥
इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम्॥

॥ २॥ ॐ समिधाऽग्निं दुवस्यत, घृतैर्बोधयता तिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन॥
ॐ सु समिद्धाय शोचिषे, धृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा॥
इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम्॥

॥ ३॥ ॐ तन्त्वा समिद्भिरंगिरो, घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठय स्वाहा॥
इदं अग्नये अंगिरसे इदं न मम्।

हवन कुण्ड के चारो ओर जल प्रोक्षण करें।

ॐ अदिते ऽनुमन्यस्व॥ पूर्व में।
ॐ अनुमते ऽनुमन्यस्व॥ पश्चिम में।
ॐ सरस्वत्य ऽनुमन्यस्व॥ उत्तर में।
ॐ देव सवितः प्रसुव यज्ञं, प्रसुव यज्ञ पतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः
केतं नः, पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु॥ चारो ओर।

निम्न मन्त्रों से धृत की आहुतियां दें। बचे हुवे धी को प्रोक्षणी पात्र में डालें।

१। ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम।
२। ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय इदं न मम।
३। ॐ अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये इदं न मम।
४। ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदं न मम

५। ॐ भूः स्वाहा। इदं अग्नये इदं न मम।

६। ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे इदं न मम।

७। ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय इदं न मम।

सामग्री की आहुतियां डालें - साथ मे धी की आहुतियां देते रहें।

१। ॐ गणाधिपतये स्वाहा॥ २। ॐ गौर्यै स्वाहा॥

३। ॐ वरुणाय स्वाहा॥ ४। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा॥

५। ॐ विष्णवे स्वाहा॥ ६। ॐ रुद्राय स्वाहा॥

७। ॐ शोडषमात्रिकाभ्यो स्वाहा॥ ८। ॐ नवग्रहदेवताभ्यो स्वाहा॥

९। ॐ अधिदेवताभ्यो स्वाहा॥ १०। ॐ प्रत्यधि देवताभ्यो स्वाहा॥

११। ॐ पञ्चलोकपालदेवताभ्यो स्वाहा॥ १२। ॐ दशदिक्पालदेवताभ्यो स्वाहा

१३। ॐ क्षेत्राधि पतये स्वाहा॥ १४। ॐ वास्तु पुरुषाय स्वाहा॥

॥ ब्रह्मा ॥

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।

सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः॥ श्री ब्रह्मणे स्वाहा॥॥

ॐ चतुर्मुखाय विद्महे हंसारूढाय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्॥

॥ विष्णु ॥

ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णो स्यूरसि विष्णो ध्रुवोऽसि।

वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥ श्री विष्णवे स्वाहा॥

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥

॥ महेश ॥

ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च

नमः शिवाय च शिवतराय च। श्री रुद्राय स्वाहा ॥

ॐ तत् पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

॥ प्रत्यधि देवता ॥

ॐ अग्निदूतं पुरो दधे हव्यावाह मुपब्रुवे देवाँ २ ऽआसादयादिह।

अग्नये अद्भयो, पृथिव्यै, विष्णवे, इन्द्राय, इन्द्राण्यै, प्रजापतये, सर्पेभ्यः, ब्रह्मणेभ्यः ॥ प्रत्यधि देवताभ्यो स्वाहा ॥ इदं प्रत्यधि देवताभ्यो इदं न मम ॥

अनेन होमेन अग्न्यादि प्रत्यधि देवताः प्रीयन्तां न ममेति जलम् उत्सृजेत् ॥

॥ पञ्चलोकपाल देवता ॥

विनायकादि पञ्चलोकपालेभ्योः इन्द्रादि दशदिकपालेभ्यश्च प्रत्येकं पूर्वोक्त द्रव्येण द्वे द्वे आहुतींजुहुयात् ॥

ॐ गणानां त्वा गणपति ५ हवामहे, प्रियाणां त्वा प्रियपति ५ हवामहे, निधीनांत्वा निधीपति ५ हवामहे वसो मम आहमजानि गर्भधमात्वम जासि गर्भधम् ॥

गणपतये, दुर्गायै, वायवे, आकाशाय, शिवाय, च पञ्चलोकपाल देवताभ्यो स्वाहा ॥

इदं पञ्चलोकपाल देवताभ्यो इदं न मम।

अनेन होमेन पञ्चलोकपाल देवताः प्रीयन्तां न ममेति जलम् उत्सृजेत् ॥

॥ दश दिकपाल देवता ॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रं आवाह्यामि ।

शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्ति नो मघबा धात्विन्द्रः ॥

इन्द्राय, अग्नये, यमाय, निर्ऋतये, वरुणाय, वायवे, आकाशाय, ईशानाय, ब्रह्मणे, अनन्ताय च दशदिकपाल देवताभ्यो स्वाहा ॥

इदं दशदिकपाल देवताभ्यो इदं न मम ॥

अनेन होमेन दशदिकपाल देवताः प्रीयन्तां न ममेति जलम् उत्सृजेत् ॥

॥ क्षेत्रपाल देवता ॥

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन ऽआवः ।

सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः ॥

ब्रह्मणे, विष्णवे, शिवाय, गणपतये, लक्ष्म्यै, सरस्वत्यै, दुर्गायै, क्षेत्रपालाय, भूतेभ्यः, वास्तोष्पतये, विश्वकर्मणे, क्षेत्रपाल देवताभ्यो स्वाहा ॥ इदं क्षेत्रपाल देवताभ्यो इदं न मम ॥

अनेन होमेन क्षेत्रपाल देवताः प्रीयन्तां न ममेति जलम् उत्सृजेत् ॥

॥ वास्तु देवता ॥

ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवो भवोः नः यस्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शञ्चतुष्पदे । वास्तु पुरुषाय स्वाहा ॥

इदं वास्तोष्पतये इदं न मम ॥

अनेन होमेन वास्तुपुरुष देवताः प्रीयन्तां न ममेति जलम् उत्सृजेत् ॥

(प्रधान देवता के लिये वैदिक मन्त्र से अथवा बीज मन्त्र या १०८ नामों से आहुतियां दें ॥)

यथाः- ॐ नमो भगवते वासुदेवाय स्वाहा ।

अथवाः- ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमही तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।

॥ स्विष्ट कृत आहुति ॥

यह प्रायश्चित् आहुति भी कहलाती है । सुपारी मिष्ठान्न आदि को पान के पत्ते में पूरी के ऊपर रखकर यह आहुति करनी चाहिये ॥

ॐ यदस्य कर्मणो ऽत्यरीरिचं, यद्वान्यून मिहाकरम् । अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात्सर्व, स्विष्टं सुहुतं करोतु मे । अग्नये स्विष्ट कृते सुहुतहुते, सर्व प्रायश्चित् आहुतिनां । कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः, कामान्त्समर्द्धय स्वाहा ।

इदं अग्नये स्विष्ट कृते इदं न मम ॥

॥ प्रायश्चित् आहुति ॥ नवाज्याहुतयः ॥

इन मन्त्रों से धी की आहुति दें - बचे हुवे धी को प्रोक्षणी पात्र में डालें ।

(1) ॐ भूः स्वाहा । इदं अग्नये इदं न मम ॥

(2) ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे इदं न मम ॥

(3) ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय इदं न मम ॥

(4) ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इदं न मम ॥

(5) ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवियासि सीष्ठाः ।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥

इदं अग्नि वरुणाभ्यां इदं न मम ॥

(6) ॐ सत्वन्नो अग्नेवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ ।
अवयक्ष्वनो वरुणं रराणो वीहि मड़ीकं सुहवो न एधि स्वाहा ॥

इदं अग्नि वरुणाभ्यां इदं न मम ॥

(7) ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभि शस्तिपाश्च सत्य मित्वमयासि ।

अया नो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषज ५ स्वाहा ॥

इदं अग्नये अयसे च इदं न मम ॥

(8) ॐ ये ते शतं वरुणये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा विताता महान्तः ।

तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥

इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः च इदं न मम ॥

(9) ॐ उदुत्तमं वरुण पाश मस्मदवाधमं विमध्यमं श्रथाय ।

अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा ॥

इदं वरुणायादित्यादितये च इदं न मम ॥

॥ पूर्णाहुती ॥

सुपारी अथवा नारियल पीला डोरा और सामग्री लेकर खड़े हो कर पूर्णाहुति करें ।

ॐ पूर्णमदः पुर्णमिदं पुर्णात्पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवा वशिष्यते । स्वाहा ॥

निम्न मन्त्र से बची हुवी सामग्री को तीन भाग में कर के प्रत्येक भाग को अग्नि मे छोड़ें ।

ॐ सर्वं वै पूर्ण ५ स्वाहा । ॐ सर्वं वै पूर्ण ५ स्वाहा । ॐ सर्वं वै पूर्ण ५ स्वाहा ।

बचे हुवे धी को एक धार से हवण कुण्ड में छोड़ें ।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्र मसि सहस्त्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा ॥ इदं वाजादिभ्यो, अग्नये, विष्णवे, रुद्राय, सोमाय, वैश्वान्नराय च, इदं न मम ॥

निम्न मन्त्र से यजमानों के उपर जल छिड़कें।

यथा बाण प्रहाराणां कवचं वारकं भवेत।

तद्वत्दैवोप घातानां शान्तिर्भवति वारिका॥

प्रोक्षणी के जल से दोनो हाथों को मन्जन कर आँख चेहरे तथा पूरे शरीर पर लगायें।

१। ॐ तेजोऽसि तेजो मयि देहि। २। ॐ वीर्यऽसि वीर्यं मयि देहि।

३। ॐ बलंऽसि बलं मयि देहि। ४। ॐ ओजोऽसि ओजो मयि देहि।

५। ॐ मन्युंऽसि मन्युं मयि देहि। ६। ॐ सहोऽसि सहो मयि देहि।

॥ भस्म धारणं त्र्यायुष करणं च ॥

कुण्ड के ऐशान्य कोण (N. E) से स्रुवा के अग्रभाग से शिर कण्ठ बाहु एवं हृदय पर लगायें।

ॐ जमदग्नेः त्र्यायुषं। इति ललाटे॥ माथे पर लगायें।

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं। इति ग्रीवायाम्॥ गले पर लगायें।

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं। इति दक्षिण बाहुमूले॥ दांये हाथ के मूल पर लगायें।

ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं। इति हिदये॥ हिदय पर लगायें।

॥ कर्पूर आरती ॥

कर्पूर गौरं करुणा वतारं संसार सारं भुजगेन्द्र हारम्।

सदा बसन्तं हृदयार विन्दे भवं भवानी सहितं नमामि॥

कदलीगर्भ सम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितं। आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

कर्पूरवर्ति संयुक्तं,घृत युक्तं मनोहरम्। तमो नाशकरं दीपं, गृहाण परमेश्वर॥

श्री सत्य नारायणाय नमः। कर्पूर आरार्तिक्यं समर्पयामि।

॥ प्रदक्षिणा ॥

यानि कानि च पापानि जनमान्तर कृतानि च।

तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे।

॥ शङ्ख जल ॥

शङ्ख मध्यस्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि।

अङ्गलग्नं मनुष्याणां सर्वं पापम् व्यपोहति ॥

॥ स्तुति प्रार्थना ॥

शान्ताकारं भुजग-शयनं, पद्मनाभं-सुरेशं। विश्वाधारं गगन-सदृशं,

मेघवर्णम् शुभाङ्गं। लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं।

वन्दे विष्णुं भवभय हरं सर्वलोकैक नाथम्॥

नमो स्त्वनन्ताय सहस्त्र मूर्तये सहस्त्र पादाक्षि शिरो रूबाहवे।

सहस्त्र नाम्ने पुरूषाय शाश्वते । सहस्त्र कोटी युग धारिणे नमः॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव-देव॥

पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः। त्राहि मां पुण्रीकाक्ष सर्व पाप हरो भव।

॥ पुष्पाञ्जलि ॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रि यैर्वा, बुद्धयात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।

करोमि यद् यत् सकलं परस्मै, नारायणायेति समर्पयामि॥

सदा शिवायेति समर्पयामि॥ जगदम्बिकायेति समर्पयामि॥

नाना सुगंधि पुष्पाणि, यथा कालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिः मया दत्तः,गृहाण परमेश्वर।

॥ क्षमा याचना ॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं, भक्तिहीनं सुरेश्वर। यत्पूजितं मया देव, परिपूर्णम् तदस्तु मे।

आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि,क्षमस्व परमेश्वर।

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम। तस्मात् कारूण्य भावेन, रक्ष मां परमेश्वर।

॥ शान्ति पाठ ॥

ॐ द्यौः शान्ति रन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः शान्ति रोषधयः

शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विष्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्ति रेव

शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः॥

॥ पञ्चामृत पान ॥

अकाल मृत्यु हरणं, सर्व व्याधि विनाशनम्।

विष्णु पादोदकं पित्वा, पुनर्जन्म न विद्यते॥

राम कहे सुख ऊपजे, कृष्ण कहे दुख जाय।

महिमा महा प्रसाद की, पावहुं प्रीत लगाय॥

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐॐ ॐ

संकीर्तन

कस्तुरी तिलकं नारायणम् - २।

कमल नयनं नारायणम् - २। नारायणम् हरि नारायणम्॥

भक्तजन परि पाल नारायणम् - २। विश्वो द्धारक नारायणम् - २ ।

नारायणम् हरि नारायणम्॥

॥ श्री सत्य नारायण जी की आरती ॥

ॐ जय लक्ष्मी रमणा स्वामी जय लक्ष्मी रमणा,
सत्य नारायण स्वामी जन पातक हरणा ॐ जय लक्ष्मी ---

रत्न जटित सिंधासन अद्भुत छबि राजै,
नारद करत निराजन धंटा ध्वनि बाजै ॐ जय लक्ष्मी ---

प्रकट भये कलि कारण द्विज को दरस दियो,
बूढ़े ब्राह्मण बनकर कञ्चन महल कियो ॐ जय लक्ष्मी ---

दुर्बल भील काष्ठहर जिन पर कृपा करी,
चन्द्र चूड़ एक राजा जिनकी विपति हरी ॐ जय लक्ष्मी ---

वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीन्हीं,
सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर अस्तुति कीन्हीं ॐ जय लक्ष्मी ---

भाव भक्ति के कारण छिन छिन रूप धर्‌यो,
श्रद्धा धारण कीनी तिनके काज सर्‌यो ॐ जय लक्ष्मी ---

ग्वाल बाल संग राजा बन में भक्ति करी,
मन वांच्छित फल दीन्हों दीन दयालु हरी ॐ जय लक्ष्मी ---

चढ़त प्रसाद सवाया कदली फल मेवा.
धूप दीप तुलसी से राजी सत्य देवा ॐ जय लक्ष्मी ---

सत्यनारायण जी की आरती जो गावै.
तन धन सुख सम्पति फल मन वाँछित पावै ॐ जय लक्ष्मी ---

॥ ॐ जय जगदीश हरे आरती ॥

ॐ जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे। भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे

ॐ जय जगदीश हरे --

जो ध्यावे फल पावे दुख बिनसे मन का। सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तन का।

ॐ जय जगदीश हरे --

मात पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी। तुम बिन और ना दूजा आश करुँ किसकी।

ॐ जय जगदीश हरे --

तुम पूरण परमात्मा तुम अंतरयामी। पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी।

ॐ जय जगदीश हरे --

तुम करुणा के सागर तुम पालन करता। मै मूरख खल कामी कृपा करो भरता।

ॐ जय जगदीश हरे --

तुमहो एक अगोचर सबके प्राण पती। किस विधि मिलूँ दयामय तुमको मैं कुमति।

ॐ जय जगदीश हरे --

दीन बंधु दुख हरता तुम रक्षक मेरे। करुणा हस्त बढ़ाओ द्वार पड़ा तेरे।

ॐ जय जगदीश हरे --

विषय विकार मिटावो पाप हरो देवा। श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ संतन की सेवा।

ॐ जय जगदीश हरे --

तन मन धन सब कुछ है तेरा। तेरा तुझ को अर्पण क्या लागे मेरा।

ॐ जय जगदीश हरे --

श्री कृष्ण जी की - आरती

ॐ जय श्री कृष्ण हरे, प्रभु जय श्री कृष्ण हरे ।
भगतन के दुख सारे, पल मे दूर करे। ॐ जय श्री कृष्ण हरे ॥

१॥ परमानन्द मुरारी, मोहन गिर धारी। स्वामी----
जय रस रास विहारी, जय जय गिर धारी। ॐ जय श्री कृष्ण हरे ॥

२॥ कर कंगन कटि किंकिनि, श्रुति कुण्डल माला। स्वामी ----
मोर मुकुट पीतांबर, सोहे बन माला। ॐ जय श्री कृष्ण हरे ॥

३॥ निरखत दीन सुदामा, दैन्य दुख टारे। स्वामी ----
गज के फन्द छुड़ाकर, भव सागर तारे। ॐ जय श्री कृष्ण हरे ॥

४॥ हिरण्यकष्यप संहरे, नरहरि रूप धरे। स्वामी ----
पाहन ते प्रभु प्रगटे, जन के बीच परे। ॐ जय श्री कृष्ण हरे ॥

५॥ केशी केश बिदारे, नर कुबेर तारे। स्वामी ----
दामोदर छवि सुन्दर, भगवत रखवारे। ॐ जय श्री कृष्ण हरे ॥

६॥ काली नाग नथैय्या, नटवर छवि सोहे। स्वामी ----
फन पर नृत्यकरे हरि, नागन मन मोहे। ॐ जय श्री कृष्ण हरे ॥

संकीर्तन

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय -२- वासुदेवाय नमो धर्म रक्षकाय।
वासुदेवाय नमो नन्द नन्दनाय। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय - २॥
वासुदेवाय नमो भक्त वत्सलाय। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय - २॥

जय जय नारायण नारायण हरि हरि

जय जय नारायण नारायण हरि हरि स्वामी नारायण नारायण हरि हरि।

लक्ष्मी नारायण नारायण हरि हरि सत्य नारायण नारायण हरि हरि॥

तेरी छवि है सुन्दर प्यारी प्यारी, हरि हरि। हम आये शरण तिहारि हरि, हरि हरि।

तेरी लीला सब से न्यारी न्यारी, हरि हरि। तेरी महिमा प्रभु है प्यारी प्यारी,हरि हरि।

१॥ अलख निरंजन भव भय भंजन जन मन रंजन दाता।

हमे शरण दो अपने चरण मे कर निर्भय जगत्राता।

तूने लाखो की नैय्या तारी तारी हरि हरि॥ जय जय नारायण---

२॥ हमने देखा तो यही लगा तेरे जग में है प्रभु दगा ही दगा।

मनमे सोचा बिन तेरे यहाँ पर कोइ न सगा कोइ न सगा।

उसने लाखों की विपदा टारी टारी हरि हरि॥ जय जय नारायण---

३॥ हरि नाम का पारस जो छूले वो हो जाये सोना ।

दोअक्षर का शब्द हरि है लेकिन बड़ा सलोना ।

उसने संकट टाले भारी भारी हरि हरि॥ जय जय नारायण---

संकीर्तन

नारायण, नारायण, नारायण बोल सत्य नारायण बोल - २।

नारायण बोल सत्य नारायण बोल - २ ॥

नारायण, नारायण, नारायण बोल सत्य नारायण बोल - २।

नारायण बोल सत्य नारायण बोल - २ ॥

नैया पार लगाओ

गिरे हुये अधमियों को दाता अपने हाथ उठाओ हो नैया पार लगा ओ।

१॥ हम कपटी पापी अति भारी दीन बन्धु तुम जग हित कारी

भूल चूक बिसरा ओ । मोरी नैया पार लगाओ ॥

२॥ हम मूरख विपदा के मारे। जान न पये भेद तिहारे ।

महिमा तुम्हारी प्रभु भेद तुम्हारे सुख की राह दिखा ओ । मेरी नैया पार लगा ओ

राम नाम साचा नाम

भजता क्यों नहि रे मन मूरख राम नाम सच्चा नाम ।

१॥ भव सागर से है यदि तरना दुख शंकट से नहि कुछ डरना

पार करेगा जीवन नैय्या राम नाम सच्चा नाम । भजता क्यों----

२॥ दुनियाँ के ये रिश्ते नाते तज दे सब को हँसते गाते ।

जीवन है जब तक तू जपले राम नाम सच्चा नाम । भजता क्यों----

३॥ हीरों का ये हार बना है चमक दमक का हाट लगा है ।

सोच समझ कर सौदा कर ले राम नाम सच्चा नाम॥ भजता क्यों----

राधा रमण कहो

१॥ जिस हाल में जिस देश में जिस भेष में रहो। राधा रमण राधा रमण राधा रमण कहो

२॥ जिस काम में जिस गाम में जिस धाम में रहो। राधा रमण राधा रमण राधा रमण कहो

३॥ जिस संग में जिस रंग में जिस ढंग में रहो। राधा रमण राधा रमण राधा रमण कहो

४॥ जिस भोग में जिस रोग में जिस योग में रहो। राधा रमण राधा रमण राधा रमण कहो

अगोचर शक्ती

सदा हरि भक्त कहते है सदा गुण गान गाते है।

अगोचर शक्ती अनुपम है न जिस को जान पाते है॥

१॥ न कोइ रंग शाला है न कोइ तूलिका दिखती।

न जाने मोर पंखो मे कहाँ से रंग आते है॥ अगोचर-

२॥ न कोइ सुग्य बैठा है वहापर शास्त्र ज्यामिति का।

अनोखी पंति दाडिम मे कहो कैसे रचता है॥ अगोचर-

३॥ न कोइ कर्म शाला है न कोइ यन्त्र है भीतर।

अहर्निश हृदय घटिका को प्रभु कैसे चलातें है॥ अगोचर-

४॥ जहाँ है पंक मट मैला चतुर्दिक नीर कायि का।

न जाने स्वच्छ पंकज को प्रभु कैसे खिलाते है॥ अगोचर-

५॥ न विदुत केन्द्र है कोइ न खम्बे तार कुछ भी हैं।

न जाने चाँद सूरज मे कहा से तेज आता है॥ अगोचर-

ॐ है जीवन हमारा ॐ प्राणाधार है

ॐ है जीवन हमारा ॐ प्राणाधार है । ॐ है कर्ता विधाता ॐ पालन हार है।

ॐ है दुख का विनाशक ॐ सर्वानन्द है । ॐ है बल तेज धारी ॐ करुणा कन्द है ।

ॐ सब का पूज्य है हम ॐ का पूजन करें । ॐ के ही ध्यान से हम शुद्ध अपना मन करें।

ॐ के गुरु मन्त्र जप से ही रहेगा शुद्ध मन। बुद्धि दिन प्रति दिन बढ़ेगी धर्म मे होगी लगन।

ॐ के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जायगा। अन्त मे यह ॐ हमको मुक्ति तक पहुँचायगा।

संकीर्तन्

हरि भक्त उठो हरि नाम जपो श्री कृष्ण हरे श्री कृष्ण हरे ।

इस प्रेम सुधा का स्वाद चखो श्री कृष्ण हरे श्री कृष्ण हरे

१ ॥ संसार सुने सब मिल के कहो इस मोहनि मन्त्र का जाप करो ।

मोहन की मुरलिया मन मे बजे । श्री कृष्ण हरे श्री कृष्ण हरे ॥

२ ॥ हमे चाहिये श्रद्धा भक्ती से गोपाल के नाम का गान करे ।

पट खोल के घट के दर्शन कर श्री कृष्ण हरे श्री कृष्ण हरे ॥

३ ॥ प्रकाश जगत मे करता है वो नन्द की आखौं का तारा ।

तेरे नैनों मे वो शयन करे श्री कृष्ण हरे श्री कृष्ण हरे ॥

४ ॥ जाहाँ श्याम के दर्शन हों निश दिन उस प्रेम नगर मे जाय बसें ।

इस धुन मे जियें इस धुन मे रमें श्री कृष्ण हरे श्री कृष्ण हरे ॥

oooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

भोग अर्पण करने का भजन

श्याम रसिया मेरे मन बसिया रुचि रुचि भोग लगाओ रसिया

१ ॥ दुर्योधन के मेवा त्याग्यो साग विदुर धर खायो रसिया रुचि रुचि भोग -

२ ॥ शवरी के वेर सुदामा के तंडुल माँग माँग हरि खायो रसिया रुचि रुचि -

३ ॥ राधा रानी के मन मे बसगयो औरन को हर्षायो रसिया रुचि रुचि -

४ ॥ जो मेरे श्याम को भोग लगावे छूट जाय लख चौरसिया रुचि रुचि -

५ ॥ सूर श्याम बलिहारि चरण की हृदय कमल में रहो बसिया रुचि रुचि .

ऽऽऽ

अमर आत्मा

अमर आत्मा सच्चिदानन्द मै हूँ। शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम्॥

१॥ अखिल विश्व का जो परमात्मा है सभी प्राणियों की वही आत्मा है
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ। शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम्॥

२॥ जिसे शस्त्र काटे न अग्नि जलाये गलाये न पानी न मृत्यु मिटाये
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ। शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम्॥

३॥ अजर और अमर जिसको वेदों ने गाया वही ज्ञान अर्जुन को हरि ने सुनाया
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ। शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम्॥

४॥ अमर आत्मा है मरणशील काया सभी प्राणियों के जो भीतर समाया
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ। शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम्॥

५॥ है तारों सितारों मे प्रकाश जिस का है सूरज व चंदा में आभास जिसका
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ। शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम्॥

६॥ जो व्यापक है कणकण में है वास जिसका नही तीन कालों में भी नाश जिसका
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ। शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम् शिवो हम्॥

संकीर्तन

ॐ तत्सत श्रीनारायण तू पुरुषोत्तम गुरु तू। सिद्ध बुद्ध तू स्कन्द विनायक सविता पावक तू।
ब्रह्म मज़्द तू यह्व शक्ति तू ईशु पिता प्रभु तू। रुद्र विष्णु तू राम कृष्ण तू रहीमताओ तू।
वासुदेव गो विश्वरुप तू चिदानन्द हरि तू। अद्वितीय तू अकाल निर्भय आत्म लिंग शिव तू।
ॐ तत्सत श्रीनारायण तू पुरुषोत्तम गुरु तू। सिद्ध बुद्ध तू स्कन्द विनायक सविता पावक तू।

अब सौंप दिया इस जीवन का

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारें हाथों में - २।

है जीत तुम्हारें हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में - २॥

१॥ मेरा निश्चय बस एक यही इक बार तुम्हे पाजाऊँ मैं।

अर्पण करदूँ दुनियाँ भरका सब प्यार तुम्हारे हाथों में - २॥ अब सौंप दिया--

२॥ जो जगमे रहुँ तो ऐसे रहुँ ज्यों जलमे कमल का फूल रहे।

मेरे सब गुण दोष समर्पित हों करतार तुम्हारे हाथों में - २॥ अब सौंप दिया--

३॥ यदि मानव का मुझे जन्म मिले तो प्रभु चरणों का पुजारी बनुँ।

इस पूजक की इक इक रग का हो तार तुम्हारें हाथों में - २॥ अब सौंप दिया-

४॥ जब जब संसार का कैदी बनुँ निस्काम भाव से कर्म करूँ।

फिर अन्त समय में प्राण तजूँ भगवान तुम्हारे हाथों में - २॥ अब सौंप दिया--

५॥ मुझ में तुझ में बस भेद यही मैं नर हुँ तुम नारायण हो ॥

मैं हुँ संसार के हाथों मे संसार तुम्हारे हाथों में - २॥ अब सौंप दिया--

---

सबसे ऊँची प्रेम सगाई

सबसे ऊँची प्रेम सगाई, सबसे ऊँची प्रेम सगाई

दुर्योधन को मेवा त्याग्यो, साग विदुर धर खाई। सबसे ऊँची ----

१॥ जूठे फल शवरी के खाये, बहु विधि स्वाद बताई। सबसे ऊँची ----

२॥ प्रेम के बस अर्जुन रथ हाँक्यो, भूल गये ठकुराई। सबसे ऊँची ----

३॥ ऐसी प्रीति बढ़ी वृन्दाबन, गोपिन नाच नचाई। सबसे ऊँची ----

४॥ सूर क्रुर इस लायक नाही, कहँ लगी करो बड़ाई। सबसे ऊँची ----

नारायण भज भाई रे

नारायण भज नारायण भज, नारायण भज भाई रे ।

देखत दीन दयालु सदा, जन के मन की मधुराई रे । नारायण भज ---

१॥ ना चाहिये दुनियाँ की दौलत, ना चाहिये ठकुराई रे ।

भिलनी के जूठे बेरों पर, रीझ गये रघुराई रे । नारायण भज ---

२॥ त्याग दिये नृप दुर्योधन के, मेवा और मिठाई रे ।

करी विदुर घर साग पात से, प्रेम भरी पहुँनाई रे । नारायण भज ---

३॥ पूज्य पिता दशरथ ने अन्तिम, श्रद्धाञ्जली नही पाई रे ।

अधम जटायू के पंखों पर, असुवन धार बहाई रे। नारायण भज ---

प्रभु की मेहरवानी

तेरी मेहरवानी का है बोझ इतना, कि मै तो चुकाने के काबिल नही हूँ।

मैं आ तो गया हूँ मगर जानता हूँ, तेरे दरपे आनेके क़ाविल नही हूँ॥

१॥ जमाने की चाहत ने हम को उठाया। तेरा नाम हरगिज़ जुवाँ पे न आया॥

वफ़ादार तेरा गुनाह गार हूँ मैं। तुम्हे मुँह दिखाने के क़ाविल नही हूँ॥

२॥ ये माना कि दाता है तू हर जहाँ का। मगर झोली आगे फैलाउँ तो कैसे॥

जो पहले दिया है वही कम नही है। मैं उसको निभाने के क़ाविल नही हूँ॥

३॥ तुम्ही ने अदा की मुझे ज़िन्दगानी। मगर तेरी महिमा नही मैंने जानी॥

करज़दार इतना हुँ तेरी दया का। कि करज़ा चुकाने के क़ाविल नही हूँ॥

४॥ तमन्ना यही है कि शिर को झुका के। तेरे दर्श इक बार जी भर के करलूँ॥

सिवा आँसु बिन्दु कि ओ मेरे मालिक ।मैं कुछ भी चढ़ाने के काविल नही हूँ

Regular activities of Hindu Heritage Society and *Some of our achievements*

In its short history, The Hindu Heritage Society Inc. has come a long way in achieving some of its goals, as laid out in its Aims and Objectives. A legally constituted charitable organization, with a comprehensive constitution to guide us, our executive members have, with the willing contribution from our members and volunteers achieved a lot of success.

- Organizing three annual functions for the last three years; Saraswati Poojan, Guru Purnima (Sanskrit Diwas celebration) and Devi Jagran.
- Divya Darshan – the Societies flagship magazine publication.
- FAQ in Hinduism booklet publication.
- Our service to community through donations and personal involvement.
- Association with other organizations to promote culture and Education.
- Regular religious services by associated members.
- Regular religious, language and music classes.
- Daily devotional Radio Programme in Sydney, including on the internet.

We do not live on our laurels, we still have a long way to go and with the grace of the almighty Lord, we will fulfil our dreams.

Some of the long time aims (dreams) harboured by our hard working committee are to one day achieve these;

- To be able to serve all persons of Hindu faith, whatever sect or denomination they belong to.
- Promote Hindu Heritage and Culture within Australia.
- Establish a Hindu reference library in all capital cities of Australia. Priority based religious service to our members.
- Far fetched as it may seem, to bring Unity among all members of the Hindu faith.
- To establish a Community Centre in Sydney (and later in other major cities) for religious / social functions.

Short biography of Late Vinita Shekhar

Vinita was born at Kakinada – a small coastal town in Andhra Pradesh, India. Her father Late Sri Sheo Prasad Verma was a Chief Engineer at the British owned Deccan Sugar factory at Samalkot near Kakinada. She had two brothers. Her father died of a heart attack in 1980. Her ailing mother lives in Patna.

She was married in 1972 and her only son was born in 1976. We were overjoyed. Vinita had prayed long and hard for his birth.

We migrated in 1984 and we bought our first house in 1986 in Sydney. Vinita started her job in 1989 in the Education department. Later she moved to the Ombudsman's office and then to NSW Police.

She was 40 when she twisted her knee one evening on return from work and little did we know that it will eventually take her life. She was a devoted mother, a loving and meticulous housewife. In spite of the pain she suffered, she spent every waking hour of her life looking after us. That was the essence of her love – simple, uncomplicated and deep-rooted.

She was our cultural and religious guide - because of her we have friends, we will cherish our roots in India and we have found faith in God. She was a deeply religious, devout and traditional woman.

Soon after our son's wedding in 2004, she suffered a minor heart attack in Delhi. She came out of it bravely and mustered all her courage for her knee operation. She was operated successfully in 2005 and we thought the worst was over. But she was in a lot of pain. "**Jaan leva dard hota hai Ji**" she used to say. On the 4th day following her operation, she suffered her final heart attack and the last of her pain. She was 52.

Her last words were to her son and bahu, "Papa ka khyal rakhna", it was all she was concerned about. As a wife, she will live forever in her husband's heart. Death will not do them part.

"SHAADI JANAM JANMANTAR KA RISHTA HOTA HAI".

As a mother, her loving memories will live with her son and bahu. And through them to her grandchildren